RNI No. MPHIN/2017/73838

1998 से निरंतर प्रकाशित

वर्ष-1, अंक-3, दिसम्बर-जनवरी 2018 ₹ 25/-

मूर्धन्य तबला वादक पं. किरण देशपांडे से सुपरिचित
कवि राग तेलंग का संवाद, पृष्ठ संख्या-8

कला समय

कला और विचार की द्वैमासिकी

संपादक
भँवरलाल श्रीवास

D82783

उद्यन्सूर्यो नुदतां मृत्युपाशान्
(अथर्ववेद 17.1.30)
वन्दे मातरम्
आओ योग करें हम
सामूहिक सूर्य नमस्कार
12 जनवरी, 2018
प्रातः 10.00 बजे
जिला मुख्यालय/जनपद मुख्यालय एवं प्रदेश के सभी शासकीय हाईस्कूल तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में एक साथ होगा आयोजन
आप सादर आमंत्रित हैं।
हर विद्यार्थी को सूर्य नमस्कार को दिनचर्या का अनिवार्य अंग बनाना चाहिए।
डॉ. कुँवर विजय शाह, मंत्री
स्कूल शिक्षा
सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए सूर्य नमस्कार सर्वश्रेष्ठ व्यायाम है।
दीपक जोशी, राज्यमंत्री
तकनीकी शिक्षा एवं कौशल विकास (स्वतंत्र प्रभार), श्रम, स्कूल शिक्षा
श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
परम तेजस्वी स्वामी विवेकानंद की जयंती को 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के रूप में मनाया जाता है। उनका आह्वान था कि युवा सबल और प्रबल बनें। उनकी जयंती पर 'सूर्य नमस्कार' के आयोजन से शरीर, मन और चेतना को सशक्त बनाने वाले इस सम्पूर्ण व्यायाम का व्यापक प्रसार होगा।
शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :
● जिला कलेक्टर ● जिला शिक्षा अधिकारी ● जिला परियोजना समन्वयक
1. प्रार्थना की मुद्रा
2. हस्त उत्तानासन
3. पाद हस्तासन
4. अश्व सञ्चालनासन
5. पर्वतासन
6. अष्टाङ्ग नमस्कार
7. भुजङ्गासन
8. पर्वतासन
9. अश्व सञ्चालनासन
10. पाद हस्तासन
11. हस्त उत्तानासन
12. प्रार्थना की मुद्रा
दूर भगाये कष्ट हजार - युग युग परखा सूर्य नमस्कार
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी
आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2018

RNI NO. MPHIN/2017/73838

(वर्ष : 20+1) पूर्णांक-90,
वर्ष-1, अंक-3, दिसम्बर-जनवरी 2018

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल द्वारा पुरस्कृत

कला समय

कला और विचार की द्वैमासिकी

❊
संरक्षक
नर्मदा प्रसाद उपाध्याय
94250 92893

❊
परामर्श

राग तेलंग
9425603460

❊
ललित शर्मा
98298 96368

❊
विशेष प्रतिनिधि
गोपेश वाजपेयी
94243 00234

❊
कानूनी सलाहकार
जयंत कुमार मेंढे (एडवोकेट)

संपादक
भँवरलाल श्रीवास
bhanwarlalshrivas@gmail.com
94256 78058

सह संपादक
लक्ष्मीकांत जवणे
laxmikantjawney@gmail.com
99936 22228

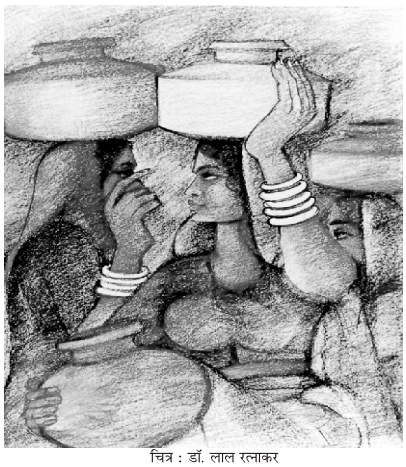

चित्र : डॉ. लाल रत्नाकर

संपादक मंडल

सजल मालवीय साहित्य
हरीश श्रीवास कला
नरिन्दर कौर प्रबंध

सदस्यता शुल्क

वार्षिक	: 150 /-	**(व्यक्तिगत)**
	: 175 /-	**(संस्थागत)**
द्वैवार्षिक	: 300 /-	**(व्यक्तिगत)**
	: 350 /-	**(संस्थागत)**
चार वर्ष	: 500 /-	**(व्यक्तिगत)**
	: 600 /-	**(संस्थागत)**
आजीवन	: 5,000 /-	**(व्यक्तिगत)**
	: 6,000 /-	**(संस्थागत)**

(कृपया सदस्यता शुल्क ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा कला समय के नाम से उक्त पते पर भेंजे)

संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग संपर्क -
जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016
फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com

आनलाइन सुविधा 'कला समय' का बैंक खाता विवरण
ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स की शाखा **(IFSC CODE : ORBC0100932)** में **KALA SAMAY** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में नगद राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हो। पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद, भोपाल, न्यायालय के अधीन ही रहेंगे।
सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक/ अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपी राईट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना ना करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 36-37, प्रेस काम्पलेक्स, जोन नं-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- भँवरलाल श्रीवास

आधी आबादी और मेरे चित्र

दुनिया जिसे आधी आबादी कहती है वही आधी आबादी मेरे चित्रों की पूरी दुनिया बनती है। यही वह आबादी है जो सदियों से सांस्कृतिक सरोकारों को सहेज कर पीढ़ियों को सौंपती रही है, वही संस्कारों का पोषण करती रही है। कितने शीतल भाव से वह अपने दर्द को अपने भीतर समेटे रखती है और कितनी सहजता से अपना दर्द छिपाये रखती है। कहने को वह आधी आबादी है लेकिन शेष आधी आबादी यानी पुरूषों की दुनिया में उसकी जगह सिर्फ हाशिए पर दिखती है जबकि हमारी दुनिया में दुख दर्द से लेकर उत्सव-त्यौहार तक हर अवसर पर उसकी उपस्थिति अपरिहार्य दिखती है। जहां तक मेरे चित्रों के परिवेश का सवाल है, उनमें गाँव इसीलिए ज्यादा दिखाई देता है क्योंकि मैं खुद अपने आप को गांव के नजदीक महसूस करता हूँ सच कहूँ तो वहीं परिवेश मुझे सजीव, सटीक और वास्तविक लगता है, बनावटी और दिखावटी नहीं। बार-बार लगता है कि हम उस आधी आबादी के ऋणी हैं और मेरे चित्र उऋण होने की सफल-असफल कोशिश भर है।

- डॉ लाल रत्नाकर

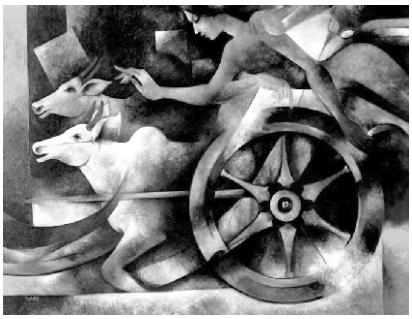

इस बार

- संपादकीय
  अवसान की सांझ, आशा की भोर/5
- कला निकष
  लक्ष्मीकांत जवणे /6
- लय ताल का राग संवाद और प्रदीप्त प्रकाश किरण
  मूर्धन्य तबला वादक पं. किरण देशपांडे से सुपरिचित कवि राग तेलंग का संवाद/9
- परकाया प्रवेश
  विश्व कविता : मारिन सोरेसक्यू की दो कविताएँ, अनुवाद : मणि मोहन/12
- जिल्दसाज़ (कहानी)
  जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली' /14
  (कथा मध्यप्रदेश से)
- मैं मानता हूँ कि उड़ान एक कला है (साक्षात्कार)
  कैप्टन विश्वास राय से लक्ष्मीकांत जवणे की बातचीत /19
- झालावाड़ की भवानी नाट्यशाला
  ललित शर्मा /27
- **यश मालवीय के दो गीत / 33**
- **डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति की तीन ग़जलें /34**
- **क्रांति कनाटे की पाँच कविताएँ /35**
- लोकगाथाओं एवं लोकगीतों का महत्व
  डॉ. ए.एल. श्रीवास्तव / 36
- नागजी पटेल का जाना बड़ी खाई है इसे भरने में समय लगेगा : रॉबिन डेविड
  रॉबिन डेविड से भँवरलाल श्रीवास का संवाद /38
- **शब्द साधक महेश श्रीवास्तव 'सरस्वती सम्मान' से अलंकृत/40**
- समवेत (सांस्कृतिक समाचार)/41

कला विशेषज्ञ डॉ. मुक्ति पाराशर सम्मानित/ डॉ. श्रीराम परिहार उत्तरप्रदेश में सम्मानित/ ममता कालिया जी को व्यास सम्मान/ दुष्यंत कुमार पाण्डुलिपि संग्रहालय ने रचनाधर्मियों का किया सम्मान/ श्रीनाथद्वारा में सम्मान समारोह/ पन्द्रहवीं शरद व्याख्यानमाला एवं सम्मान समारोह तथा अक्षरा साहित्य मासिकी का लोकार्पण/ 56 वाँ पंचाक्षर संगीत समारोह/ कैलाश मंडलेकर को प्रथम ज्ञान चतुर्वेदी व्यंग्य सम्मान/ श्री महेश पाल की चित्रकृतियों की एकल प्रदर्शनी/ राज्य संग्रहालय में साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादकों का विमर्श/ आपके पत्र/ पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' स्मृति 'शब्द शिखर' अलंकरण समारोह / 'कला समय' एवं 'शिवम् पूर्णा' पत्रिकाओं का लोकार्पण ।

- **नन्हें कलाकारों की दुनिया/49**
- महिला प्रतिभाएँ वक्र रेखाओं में
  निर्मिश ठाकर/50

शब्द संयोजन एवं आकल्पन - **शिवम् ग्राफिक्स**, वाट्सएप नं.-07974917691, **आवरण चित्र** - डॉ. लाल रत्नाकर, **छायाचित्र** - मनीष सराठे,
रेखांकन - मदनलाल मालवीय, **सहयोग** - राहुल, धनसिंह,

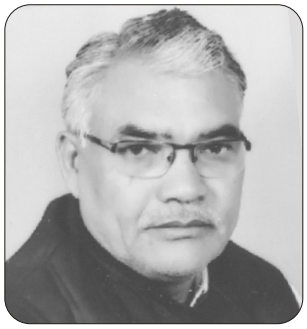

अवसान की सांझ, आशा की भोर

कोई जीवट पथिक ही दुरूह पथ को अपने अनुकूल और सुगम बना सकता है। दुनिया में कुछ भी निरापद नहीं है। संघर्ष तथा विकास सहगामी होते हैं। सफलता कई कारकों पर निर्भर करती है। अच्छे पात्र बनाने के लिए मिट्टी, चाक और डंडा अपर्याप्त है, कुशल कुम्भकार की प्रतिभा और श्रम यहाँ निर्णायक भूमिका निभाते हैं ।

विदा लेता वर्ष अपने साथ हमारे ऐसे ही सामर्थ्यवान कुम्भकारों को अपना सहचर बना गया और हम उन्हें अलविदा कहने के लिए बाध्य हुए। सृष्टि के इस कठोर निर्मम नियम के सम्मुख हम दया के पात्र हैं ।

खोया हुआ तो मिलने की एक आशा कायम करता है पर यह प्रतिभाओं का अवसान खोना नहीं कुछ और है।

कुशलता और प्रावीण्य के कई प्रतिमान नष्ट हो गए। सब अपने अपने हुनर के पर्याय –

*ओम पुरी, विनोद खन्ना, कुंदन शाह, रीमा लागू, टॉम आल्टर, शशि कपूर;

*कुंवर नारायण, चन्द्रकान्त देवताले, कृष्ण शलभ, सुनीता जैन, दूधनाथ सिंह;

*किशोरी अमोणकर, गिरिजा देवी;

*लक्ष्मण भांड, श्री वामन ठाकरे, सुरेश चौधरी, सचिदा नागदेव, आनंद टेहन गुरिया;

*नागजी पटेल;

अभिनय, लेखन, गायन, चित्रकारी एवं मूर्तिकारी; सब रिक्त हुए हैं। हमारे पास शेष है, उनकी कृतियों और रचनाओं का साहचर्य जो कला का मार्गदर्शक है, हमारी प्रेरणा का स्रोत। उन्हें हमारी भाव व आदर सिक्त श्रद्धांजलि।

इस लुप्त और प्रकट होने के विराट परिदृश्य में आशा वह शाश्वत डोर है जो मनुष्य के अस्तित्व को बिखराव से रोककर निरंतर सृजन में प्रवृत रखती है। यह दृश्यमान हुआ शुजालपुर में।

महामनीषी पूज्य बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की 120 वीं जयन्ती पर उनकी पावन स्मृति में मालवा लोक साहित्य परिषद्, शुजालपुर ने भव्य सम्मान समारोह का दिनांक 26 दिसम्बर 2017 को आयोजन किया। परिषद् के आत्मीय निमंत्रण पर 'कला समय' और 'शिवम् पूर्णा' अपनी उपस्थिति के दौरान स्थापित तथा उदीयमान प्रतिभाओं की साक्षात सक्रियता से अभिभूत हो गये। परिषद् ने नरेंद्र श्रीवास्तव 'नवनीत', वेद हिमांशु, ललित शर्मा, बृजकिशोर तिवारी, डॉ. वर्षा नालमे, माया मालवेन्द्र, रामप्रसाद 'सहज', ज़ेड. श्वेतिमा निगम इन विभूतियों को 'शब्द-शिखर' सम्मान से अलंकृत किया, इनकी कला संसार में उपस्थिति कला की सम्भावनाओं के प्रति आश्वस्त करती है।

शुजालपुर में परिषद् का सौजन्य, अलंकृत रचनाधर्मी तथा विद्यमान प्रबुद्ध समुदाय के समवेत कलापारखी वातावरण से उत्साहित होकर 'कला समय' एवं 'शिवम् पूर्णा' ने अपने अंकों का लोकार्पण किया जिस पर न मात्र त्वरित टिप्पणियां मिली वरन सुझाव तथा टिप्पणियों का मिलना जारी है।

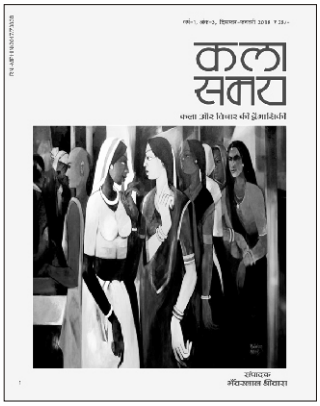

इस नववर्ष की नूतनता निश्चित रूप से आपकी 'कला समय' से नई अपेक्षाओं, नए सृजन तथा नवोन्मेषी शोध पर निर्भर करती है साथ ही आपको सुनिश्चित करना होगा कि यह शोध, सामग्री और श्रृंगार हम तक पहुंचे।

इन नए स्तंभों की शुरुआत हो रही है, इस पर अपनी राय से अवश्य अवगत कराएं।

1. 'कथा मध्यप्रदेश' सम्पादन- संतोष चौबे; इस बहुमूल्य धरोहर का किसी पत्रिका के माध्यम से पहली बार प्रकाशन। 2. मणि मोहन की काव्यधर्मिता-प्रतिनिधि विदेशी कवियों की रचनाओं का हिन्दी अनुवाद। 3. डिवाइन स्माईल; सौजन्य से मोहन शिंगणे- छोटे बच्चों द्वारा अपनी अनुभूतियों का चित्रीकरण।

नए वर्ष व वसंत पंचमी पर हार्दिक मंगल कामनायें और अभिनन्दन।

– भँवरलाल श्रीवास

कला निकष

यह काल की उस किस्म की दस्तक तो नहीं जिसे मनुष्य ने दो पैरों पर चलते समय, आग के उपयोग के समय, पहिये के इस्तेमाल के समय, पदार्थ को प्रकाश की रफ़्तार के वर्ग की गति से घुमाने के सूत्र की जानकारी के समय अपने मस्तक के कपाट पर महसूस किया। इन सारे मौकों पर मनुष्य ने अपने आप को वक़्त के सांचे में ढाला, अपने आप में जैविक और अजैविक परिवर्तनों के साथ।

शायद यह दौर जैविक बदलाव का हो।

मनुष्य में गुणात्मक परिवर्तन का मुहूर्त।

अभी तक पढ़ने लिखने सुनने सीखने के बाद जो बातें मन में घर कर गयी हैं, वो आपसे भी बाँटता हूँ :-

1. कुदरत बदलती है। इस बात का ही अर्थ है कि मनुष्य बदलता है। यह बात मनुष्य की सोच और दृष्टि से अप्रभावित है। मनुष्य की सोच और दृष्टि की मात्र इतनी भूमिका है कि वह इस बदलाव को अपने सामर्थ्य के सापेक्ष समय के किसी बिंदु पर विकास और किसी बिंदु पर विनाश कहती है।

2. मनुष्य की जानकारी के हर स्तर पर जानने के लिए एक 'शेष' बचा हुआ होता है। इस तथ्य को जानकर वह ना तो थके और कहीं 'सब जानता हूँ इसलिए पूर्ण हो गया हूँ' इस भ्रम में ना पड़ जाए, इसकी एक कुदरती व्यवस्था है,जिसे हम 'उत्सुकता या जिज्ञासा' के रूप में जानते हैं, बदले में मिलती है एक जानकारी जिसके प्राप्त होने के बावजूद वह 'शेष' हमेशा बचा रहता है, मजेदार बात यह है कि जानकारी तो मिली फिर भी वह रहस्यमय 'शेष' मिटा नहीं है, रहस्यमय बात यह है कि यह सच्चाई जानकर भी मनुष्य एक मोदमय परितोष से भर जाता है।

हर स्तर पर मौजूद यह 'शेष' और इसकी रहस्यमयता ही अपने आप में वह आकर्षण, वह मोहिनी है जो मनुष्य को उसकी अनंत यात्रा का अथक घुमक्कड़ बनाए रखती है।

इन तथ्यों की रोशनी में मैं अपने आप को आश्वस्त या हर संदेह से परे महसूस करता हूँ कि 'ए आई' मनुष्य के जारी सफ़र में 'ऐसा तो होते रहता है' वाली किस्म की घटना है ।

मनुष्य की 'मौलिकता' के साथ कुछ बेजा नहीं होने वाला है ।

इस संवाद में जिस 'शेष' का जिक्र है मुझे उस पर भरोसा है।

चौंकना तब स्वाभाविक होगा जब 'ए आई' ही सर्जक होगा और सराहना करने वाला भी 'ए आई' ।

परन्तु दोस्तों,जब तक कृति पर होने वाली 'वाह' में योनिजधर्मा; रक्त अस्थि वाली हथेलियाँ बजेगी, लाज-शरम वाली आँखें गीली होंगीं, मांस-मज्जा वाले अधर मुस्कुरायेंगें, डी एन ए और स्नायु तंत्र की जुगल बंदी जारी रहेगी तब तक 'ए आई' सिर्फ और सिर्फ गैजेट (gadget) है। यह 'वाह' मानवीय देह के लिए मजबूर है, किसी भी 'ए आई' की औकात से बाहर ।

कला के आनंद लोक की यात्रा में मनुष्य एक जगह पर आकर ठिठका सा खड़ा है। उसने अपनी कारगुजारी से बुद्धिमत्ता या प्रज्ञता या दानिशमंदी या intelligence की ही रचना कर डाली। जी हाँ, हस्त निर्मित बुद्धिमत्ता, दस्तकारी से रची दानिशमंदी, अंगरेजी में artificial intelligence, जिसे आजकल '**ए आई** (A I)' के नाम से जाना जाता है, आज

कैलकुलेटर से रोबोट तक सब हमें चौंकाते हैं। बहरहाल मेरा मन इसे artificial intelligence या कृत्रिम बुद्धिमत्ता या दिखावटी दानिशमंदी कहने से मना करता है क्योंकि मुझे यह मानुषिक यत्नों या इंसानी कोशिशों का अपमान लगता है। खैर !!

सामान्य तौर पर 'ए आई' को चार खण्डों में समझा जाता है ।

मनुष्य की तरह 1. सोचना, 2. बर्ताव, 3. संवेदनशील व समझदार (भावना, तर्क और विचार युक्त) तथा 4. भावना, तर्क और विचार के तथ्यों को समझकर प्रतिक्रिया देना ।

न्यूजर्सी में रटजर्स यूनिवर्सिटी (Rutgers University) की प्रयोगशाला 'आर्ट एंड आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस लेबोरेट्री (Art and Artificial Intelligence Laboratory) ' में उक्त अवधारणा के अनुसार वैज्ञानिक पद्धति से कला पर कार्य जारी है। उन्होंने जेनेरेटिव एडवर्सरिअल नेटवर्क्स (Generative Adversarial Networks) संक्षिप्त में GAN सिस्टम विकसित किया हुआ है, जिसमें बहुत दिलचस्प प्रयोग हो रहे हैं।

मैंने अपनी उत्सुकता को 'गूगल' पर चिपकाया तो कुछ चकित करने वाले नतीजे मिले –

देखिये, कम्प्यूटर से बने चित्र, क्या ये मनुष्य की प्रतिभा को भविष्य में कुछ करेंगे या निखारेंगे ?

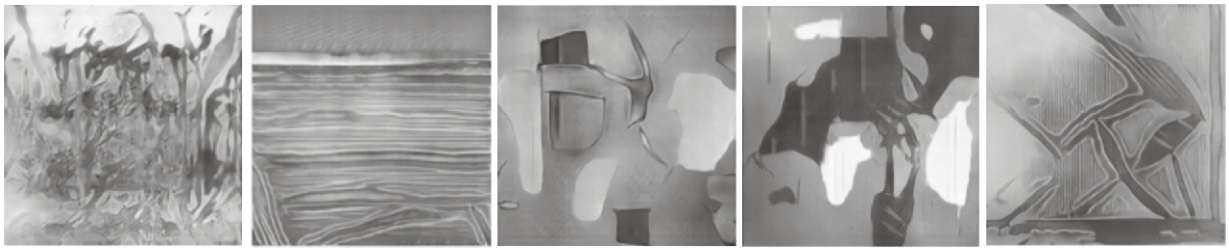

मुझे ये चित्रकारी 19 वीं सदी के कला आन्दोलन 'प्रभाववाद' (Impressionism) की रंगदारी से 20 वीं सदी के आकारों से विद्रोह वाली (Abstract Art) की तरफ ले जाती लग रही है। मुझे 'प्रभाववादी' प्राकृतिक लैंडस्केप जैसा भी लग रहा है और 'अमूर्त कला' अर्थात आदमी की समझ में जो आकार अभी तक नहीं थे, उनका भी रहस्योद्घाटन होने जैसा लग रहा है, किसी किसी चित्र में आधुनिकता एवं नव आधुनिकता का भी आभास होता दिखाई दे रहा है।

मन नहीं भरा और उत्सुकता हुई कि 'ए आई' की क्या काव्य में भी सेंधमारी है ? क्या कविता के लिये कोई दिल है, कम्प्यूटर के पास ? देखिये क्या हुआ–

'ए आई' का सृजन	अनुवाद
तिरछे और बोल्ड अक्षरों में कम्प्यूटर (गणक) को दी गयी कमांड है, बीच की तीन पंक्तियाँ 'ए आई' का कमाल है।	स्मरण रखे कि तिरछे और बोल्ड अक्षर मूल अंग्रेजी पंक्तियों का हिन्दी अनुवाद है। शेष बीच की तीन पंक्तियों में भाव संप्रेषण के लिए अनुवाद में लेखक ने अपनी स्वतन्त्रता का उपयोग किया है।
He was silent for a long moment. It was quite for a moment. It was dark and cold. There was a pause. ***It was my turn.***	***वह एक लम्बे पल भर खामोश रहा।*** पल की जरूरत के मुताबिक़ । यह था स्याह और सर्द । ठहराव था । ***यह मेरी बारी थी ।***

मेरे अनुवाद में खासकर तरतीब(शब्दों की जमावट) में खामी हो सकती है पर मेरे तक पहुँच रहा अर्थ कुछ ऐसा लगता है :- वह असामान्य क्षण भर मौन रहा, उसका मौन उस क्षण के लिए पर्याप्त था, वह पल स्याह और सर्द था, वहां सब रुका रुका सा था। यह थी तो मेरी बारी ।

यह घोषणा कि मेरी बारी थी अर्थात मेरे निष्पादन का मौका था पर जबरन 'उस' से निर्वाह करवाया गया इसलिए दु:ख और अवसाद की स्थिति बनी जो मेरी ही दुर्भावना या चालाकी या ऐय्यारी थी कि मैंने उसे वहां धकेल दिया।

खैर, अभिव्यंजना तो निश्चित ही है।

मेरे 'गूगल' से ठिठोली के परिणाम भौंचक्का करने वाले रहे। आप से साझा करता हूँ :-

तो क्या 'ए आई', कला के स्पेस में मनुष्य की आज़ादी के लिए चुनौती साबित होगा? या इस स्पेस में कोई सरहद खींचकर मनुष्य के स्वयम्भू होने के सच को मनुष्य की गलती जतलाते हुए खारिज कर रहा है? या मनुष्य की भाव अभिव्यक्ति को कल्पना से जबरदस्ती छुड़ाकर गणना के हवाले कर रहा है?

अनायास यह याद आ रहा है :-

बहुभिर्प्रलापैः किम्, त्रयलोके सचराचरे ।
यद् किंचिद् वस्तु तत्सर्वम्, गणितेन् बिना न हि ।।

(महावीराचार्य, जैन गणितज्ञ)

बहुत प्रलाप करने से क्या लाभ है ? इस चराचर जगत में जो कोई भी वस्तु है वह गणित के बिना नहीं है।

'अनुमान' एक एक मानसिक या मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। अनुमान को व्यक्त करने का माध्यम युक्ति या तदबीर या contrivance है, जो आभासी (virtual) अनुभवों से वास्तविक (real) अनुभवों तक दिमाग को सफ़र करवाता है।

यह युक्ति ही है जो व्यक्ति के विस्तार में कभी कंठ से निकली चीख कभी चुप्पी की तरह निकलती है । यह युक्ति या ख़ास उपाय ही है जो भाषा, भंगिमाओं, रंग तथा श्रम से अपने मन के भाव को दूसरे के मन तक पहुंचा देती है। इस प्रकार साहित्य, नृत्य, चित्रकारी तथा मूर्ति या स्मारकों का सृजन हो जाता है। यह युक्ति ही है जिसने कल्पना, परिकल्पना और प्रमेय को मान्यता, नियम और सिद्धांत में बदल दिया।

यह युक्ति ही है जिसने विचार और भाव को दर्शन, विज्ञान और कला की मदद से इस स्तनपायी प्राणी (mammal) को व्यक्ति (individual) में बदल दिया। आज हर मानस 'थ्री- डी' अर्थात 'त्रि-आयामी' है, प्रत्येक मानस; दर्शन, विज्ञान और कला के तीनों आयामों में हरेक पल पर खुला और खिला है।

दर्शन, विज्ञान और कला के आयामों में पुंजीभूत मनुष्य।

युक्ति ही कला है पर युक्ति सिर्फ कला ही नहीं है ।

इस सोच की पीठ पर जिन दस्तावेजी साक्ष्यों (documentary proofs) का हाथ हैं, वे हैं :-

1. पॉयलट विश्वास से बातचीत कला के व्योम में यान की उड़ान ।
2. कथा मध्य प्रदेश सम्पादन संतोष चौबे कला के काल पात्र में भविष्य का मार्ग दर्शन करता जिल्दबद्ध अतीत।
3. मणि मोहन की काव्यधर्मिता वैश्विक कविता की आत्मा का हिन्दी में परकाया प्रवेश।
4. डिवाइन स्माईल सौजन्य से मोहन शिंगणे बचपन के लेंस से रेखा-रंग का दर्शन।

आईये, 'कला समय' के इस अंक में प्रवेश करें, इस समीकरण के साथ -

पूरी जिज्ञासा = अधूरी जानकारी + 'शेष' = मोदमय परितोष

(1. यहाँ केवल 'जानकारी' ही परिवर्तनशील घटक है।

2. पूरी जिज्ञासा एवं मोदमय परितोष के लिए मनुष्य के अस्तित्व का होना एक मात्र शर्त है।

3. 'शेष' के लिये कोई शर्त नहीं।)

- **लक्ष्मीकांत जवणे**
laxmikantjawney@gmail.com
M- 099936 22228

मूर्धन्य तबला वादक पं. किरण देशपांडे जी से सुपरिचित कवि राग तेलंग का संवाद

साक्षात्कार

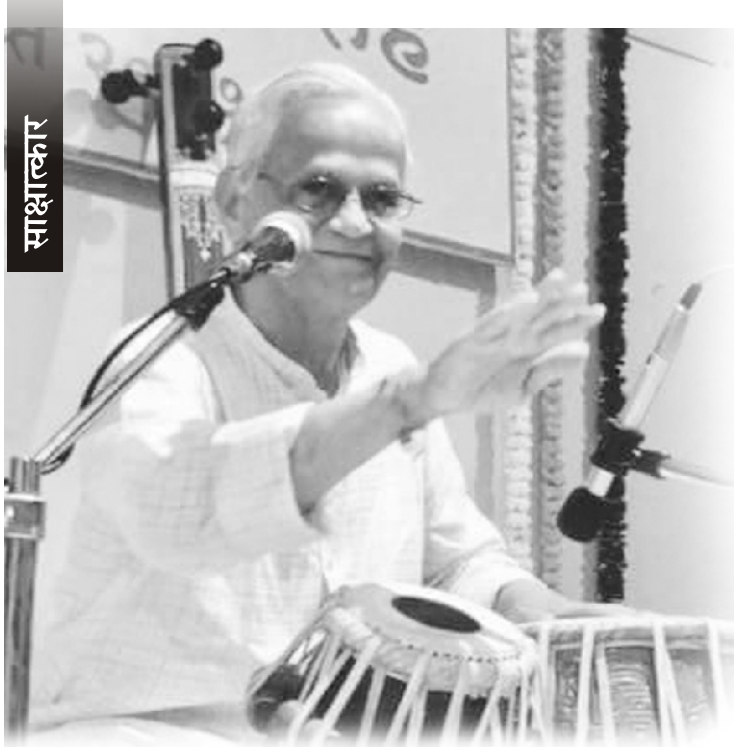

लय ताल का राग संवाद और प्रदीप्त प्रकाश किरण

कुछ अनौपचारिक मुलाकातों के संवाद हमारे जीवन भर की धरोहर बन जाते हैं। अक्सर ऐसी मुलाकातें स्मृतियों या किस्सों में आकर ठहर जाती हैं और वक़्त के साथ धुंधली पड़ जाती है।

यहां हम जो भेंट वार्ता प्रकाशित कर रहे हैं, वह संगीत की दुनिया के लिए धरोहर की श्रेणी में कही जा सकती है।

जी हाँ ! यह भेंट वार्ता है लगभग तीन दशक पहले दो अप्रतिम कला व्यक्तित्व का विरल संवाद।

हम बात कर रहे हैं, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के लगभग सभी दिग्गज कलाकारों के साथ तबला संगत कर चुके और वर्तमान में शीर्षस्थ तबला गुरु और भारत भवन के ट्रस्टी पं. किरण देशपांडे जी की और उनसे बातचीत की है समकालीन हिन्दी कविता के प्रतिनिधि हस्ताक्षर राग तेलंग ने।

यह विरल बातचीत एक ऐसा चलचित्र सामने लाती है जैसे कि 'न सीपी टूटे न मोती फूटे'। संवाद से आती लय अभंग है और निकला सार अमृत रस।

राग जी को यह दुर्लभ और अनमोल मोती 'कला समय' को सौंपने का शुक्रिया तो है ही साथ ही पं. किरण देशपांडे जी से आशीष की अपेक्षा कला समय परिवार करता है।

तबले के विषय में यह एक धारणा है कि हज़रत अमीर खुसरो तबले के आविष्कारक हैं परन्तु वास्तविकता ऐसी है कि ना तो खुसरो या कोई अन्य समकालीन साक्ष्य या मुग़ल दरबारों में तबले का कोई जिक्र दीख पाता है।

प्रामाणिक कसौटियों से थोड़ा परे होकर देखें तो घटनाक्रम से एक अनुमान आकार लेता है कि अलाउद्दीन खिलज़ी के दरबार में उनके मंत्री गोपाल नायक ख्यात गायक थे, उनका संगतदार एक कुशल मृदंग वादक था। मृदंग को दो भागों में बाँटकर तबले का रूपाकार दिये जाते समय देवगिरी का मृदंग वादक अमीर खुसरो के पास था शायद इसीलिए कहीं खिलजी इससे जुड़ जाते हैं तो कहीं खुसरो। कुल- मिलाकर यह विषय विवाद ग्रस्त है।

विश्वसनीय सिरा जो थामा जा सकता है वह है उस्ताद सुधार खाँ जिन्हें प्रारम्भिक प्रवर्तक होने का श्रेय निस्संकोच दिया जा सकता है। इन्हें राज्याश्रय दिल्ली दरबार का था, इनका निवास दिल्ली था, इसलिए ये दिल्ली घराने के मूल प्रवर्तक हुए। इन्होंने तबले के पृथक 'बाज' का निर्माण किया इसे ही दिल्ली बाज कहा गया। इस प्रकार तबले के घराने की नींव पडी। इस घराने के उस्ताद अहमद जान थिरकवा ने खूब नाम कमाया।

तबले के अन्य घरानों ने अपनी शैलियों से तबला वादन को शिखर तक लाने में कसर नहीं छोड़ी। इन घरानों के बिना तबला वादन के इतिहास की जानकारी अधूरी है :-

1. अजराड़ा घराना,
2. पूरब घराना,
3. बनारस घराना,
4. फर्रूखाबाद घराना,
5. लखनऊ घराना,
6. पंजाब घराना।

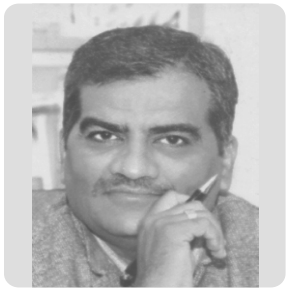

- राग तेलंग

वर्तमान में तबला यह अत्यंत लोकप्रिय संज्ञा है, अपनी साधना, मेहनत व सूझबूझ से इसे लोकप्रिय करने में जहां उस्ताद अहमद जान थिरकवा, पंडित सामता प्रसाद का नाम है वहीं उस्ताद जाकिर हुसैन की भूमिका ने इसे संगत वाद्य से एकल वाद्य की पंक्ति में स्थापित कर दिया।

मध्य प्रदेश ने भी ऐसे तबला वादक दिए हैं जिनकी प्रतिभा और प्रदर्शन ने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तबले की कलात्मकता को स्थापित करने में अग्रणी भूमिका निबाही।

ऐसे ही एक कलाकार हैं पंडित श्री किरण देशपांडे !

• राग- आपकी प्रारम्भिक शिक्षा ?

किरण जी- पिताश्री स. भ. देशपांडे जी से फिर तबले की विधिवत उच्च शिक्षा हैदराबाद के विख्यात तबला वादक उस्ताद शेख दाऊद जी के निर्देशन में।

• राग- संगीत की अन्य विधाओं के अतिरिक्त तबले के प्रति विशेष झुकाव क्यों ?

किरण जी- जैसा कि आमतौर पर देखा जाता है कि बच्चों को स्वर की अपेक्षा ताल आनंद देते हैं तो उनका झुकाव ताल की तरफ अधिक होता है, मुझे भी बचपन से ऐसा झुकाव रहा है वैसे मुझे कंठ संगीत का भी शौक रहा तथा मैंने गायन में पूज्य पिताजी स्वर्गीय दादा देशपांडे जी के निर्देशन में एम.ए. किया।

• राग- सर्वप्रथम किस प्रतिष्ठित कलाकार के साथ संगति की ? उस समय का अनुभव, उम्र इत्यादि.....

किरण जी- विगत लगभग 40 वर्षों से मैं तबला वादन कर रहा हूँ, मुझे निश्चित रूप से स्मरण नहीं है कि मैंने कब और किस प्रतिष्ठित कलाकार के साथ प्रथम बार तबला संगति की परन्तु मैं सगर्व कह सकता हूँ कि मैंने तीन पीढ़ियों के वरिष्ठ और लोकप्रिय संगीतकारों के साथ तबले पर संगत की है।

• राग- किन प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ संगत की है ?

किरणजी- पुराने ख्यात संगीतज्ञों में पंडित कृष्णराव शंकर पण्डित, पंडित पटवर्धन, पंडित नारायणराव व्यास, पंडित गजाननराव जोशी आदि के साथ तथा वर्तमान में पंडित मल्लिकार्जुन मंसूर, पंडित रवि शंकर, उस्ताद विलायत खाँ,

स्व. पंडित कुमार गन्धर्व, पंडित रामनारायण, पंडित भीमसेन जोशी, उस्ताद अमज़द अली खाँ, स्व. वसंतराव देशपांडे, पंडित जसराज, श्री बुद्धादित्य मुखर्जी, श्री शाहिद परवेज़, श्री विश्व मोहन भट्ट, मालिनी राजुरकर,जितेन्द्र अभिषेकी इत्यादि प्रमुख है।

राग- वैसे तो आप गायन, वादन, नृत्य की संगति के साथ स्वतंत्र वादन के प्रदर्शन में दक्ष हैं परन्तु सबसे ज्यादा, विशेष आनंद की अनुभूति, एहसास, आपको कब होता है ?

किरणजी- मुझे वाद्यों के साथ तबला संगति करने में विशेष आनंद आता है पर लय प्रधान गायकी के साथ भी बजाने में प्रसन्नता होती है, नृत्यकार अथवा नृत्यांगना के साथ रियाज़ करने का पर्याप्त अवसर मिले तो उनके साथ भी संगत करना चुनौतीपूर्ण लगता है।

• राग- आपने विदेश यात्राएं भी की हैं, विवरण ?

किरणजी- सर्वप्रथम 1965 में श्रीमती जया विश्वास के साथ यूरोप का व्यापक दौरा, 1983 में श्री बुद्धादित्य मुखर्जी के साथ कनाडा, फ्रांस तथा चेकोस्लाविया, 1984 में श्री गोपालकृष्ण शर्मा के साथ अमेरिका का सांगितिक प्रवास, किया। इसी तरह 1971 व 72 में प्रख्यात पेंसिलवानिया विश्वविद्यालय फिलाडेल्फिया, अमेरिका से फैलोशिप के लिए आमंत्रित किया गया, वहां छात्रों को कॅम्प्रेटिव्ह म्यूजिक के उदाहरण, नमूने इत्यादि देने में एक रोमांचक आनंद अनुभव किया .....

• राग- आपने सम्पूर्ण भारत में अनेक कार्यक्रमों में हिस्सा लिया .....

किरण जी- भोपाल में स्थापित भारत भवन, तानसेन समारोह ग्वालियर, मध्यप्रदेश कला परिषद द्वारा आयोजित उत्सव और उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी द्वारा आयोजित सभी महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में हिस्सेदारी रही।

• राग- आपकी नजर में अच्छे तबला वादक के क्या मापदंड हैं ?

किरणजी- अच्छे तबला वादक के लिए यह आवश्यक है कि वह गुरु शिष्य परम्परा के अंतर्गत किसी मान्यवर गुरु अथवा उस्ताद से परम्परागत शिक्षा प्राप्त करे। एक गुरु के पास पूर्ण विद्या प्राप्त कर उनकी अनुमति से अन्य गुरु से तालीम प्राप्त करे। तबले के विविध घरानों की उसे जानकारी अवश्य हो पर उसका वादन नई सम्भावनाओं को व्यक्त करने में भी समर्थ होना चाहिए। एक कुशल तबला वादक को स्वतंत्र वादन के साथ साथ संगति में भी निपुणता प्राप्त करना अनिवार्य है। संगतदार को अनुकूल संगति प्रदान करते हुए संगीत में रस निर्मिती में अपना योगदान देते रहना चाहिये। तैयार तबला वादक को भी स्वयं संयमित रहना आवश्यक होता है।

• राग- आप किस घराने को सबसे ज्यादा पसंद करते हैं व वादन और प्रदर्शन में उस शैली का प्रचुर उपयोग करते हैं ?

किरणजी- दिल्ली घराना मेरी व्यक्तिगत पसंद है परन्तु अन्य घरानों की विशिष्टताओं को सम्मिलित करते हुए मुझे संतोष मिलता है।

• राग- आपके प्रमुख शिष्य ?

किरणजी- श्री विजय घाटे, श्री करोड़ीलाल भट्ट, चिरंजीव सुप्रित देशपांडे।

• राग- अन्य कलाकारों की तुलना में तबला वादकों में क्या कोई असंतोष..... ?

किरणजी- इस प्रश्न का उत्तर मेरा व्यक्तिगत नहीं है वरन तमाम तबला वादकों को जो शिकायत या असंतोष होता है वह प्राय: समान है। संगीत कार्यक्रमों से लेकर रसिकों तक सभी का नज़रिया ऐसा होता है कि गायक या लयकार का दर्जा प्रमुख है और तबला वादक का दर्जा संगतकार का है जो सहायक मात्र जैसा है जबकि विद्यार्थी से कलाकार बनते तक अथवा मंच पर प्रदर्शन के दौरान तबला वादक का भी उतना ही श्रम, रियाज़, लगन और समर्पण उसके हुनर को मिलता है जितना किसी अन्य लयकार या गायक को देना पड़ता है।

• राग- तबले का भविष्य ?

किरण जी- बहुत उज्ज्वल ! संगीत के क्षेत्र में श्रोताओं में सबसे ज्यादा लोकप्रिय वाद्य तबला है, नए विद्यार्थियों व कलाकारों के द्वारा तमाम प्रयोग जैसे चामत्कारिक तिहाईयां व लयकारी के वादन-प्रदर्शन से तबले के प्रचार प्रसार में काफी मदद मिली है। आज किसी साज के उपयोग के बिना ही सिर्फ तबले के बोलों से दृश्य में अनुकूल वातावरण रचा जा रहा है, जो बड़ी खास बात है।

• राग- तबले के विद्यार्थियों के लिए कोई सन्देश ?

किरण जी- तबले के विद्यार्थियों को मेरी शुभकामनाएं हैं। सन्देश के रूप में एक ही मुख्य बात है रियाज़, मेहनत, सबक सभी का अत्यंत महत्व है। तबला वादन में कोई सरल, संक्षिप्त या शॉर्टकट नहीं है। विद्यार्थियों को यह शिकायत रहती है कि मैं नृत्य के साथ या गजल के साथ नहीं बजाता, मैं तो सिर्फ स्वतंत्र वादन या शुद्ध शास्त्रीय गायन-वादन के साथ संगत करता हूँ ! यह गलत है। विद्यार्थियों को संगीत की सभी विधाओं में बजाने का अभ्यास करना चाहिए, किसी भी विधा को तबला वादक नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता। ■

परकाया प्रवेश

विश्व कविता
मारिन सोरेसक्यू की दो कविताएँ

मारिन सोरेसक्यू (1936- 1996) **अनुवाद : मणि मोहन**

रोमानिया में जन्मे मारिन सोरेसक्यू ने कवि के अलावा नाटक और निबंध भी लिखे साथ ही अनुवाद के कार्य में भी संलग्न रहे। दूसरे अन्य यूरोपियन कवियों की तरह जिन्होंने युद्ध के बाद लिखना शुरू किया था, सोरेसक्यू ने भी रूमानी प्रतीकात्मकता के पूर्वाग्रहों से मुक्त होना जरूरी समझा। उनकी कविताओं में एक प्रतीक कथा होती है जो मानवीय यथार्थ तक फैंटेसी और रहस्योक्ति के रास्ते पहुंचती है। उनकी कविताओं में एक अलग तरह के कौतुक और परिहास को भी देखा जा सकता है। परंतु यह कौतुक और परिहास कवि के लिए एक साधन मात्र है, साध्य नहीं। अपनी कविताओं में वे मनुष्य और उसकी अस्मिता, उसकी स्वतंत्रता और उसके जीवन संघर्षों से जुड़े प्रश्नों से जूझते दिखाई देते हैं।

अपनी कविताओं और नाटकों के लिए उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कार और सम्मान मिले। अपने मुल्क रोमानिया में उनकी लोकप्रियता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि श्रोताओं की अपार भीड़ के कारण उनके कविता पाठ स्टेडियम में आयोजित किये जाते थे। अपनी मृत्यु के कुछ पहले ही उन्हें नोबेल पुरस्कार के लिए भी नामित किया गया था ।

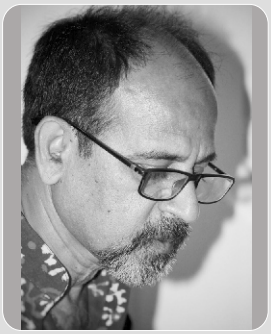

● श्री मणि मोहन : 2 मई 1967, सिरोंज(म.प्र.)
● अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर तथा शोध उपाधि
● चर्चित संग्रह:'शायद', 'दुर्दिनों की बारिश में रंग'
● रोमेनियन कवि मारिन सोरेसक्यू व तुर्की कवयित्री मुइसेर येनिया की कविताओं का अनुवाद
● आपकी कविताओं के उर्दू, मराठी, पंजाबी, अंग्रेजी भाषाओं में अनुवाद हुये।
● वागेश्वरी सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित।
● सम्प्रति: प्राध्यापक, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गंज बासौदा (म.प्र.)

छूटते बनते जातीय बिम्ब, प्रतीक और मुहावरों में स्थानीय प्रथा, कथा और व्यथा रची बसी होती है। इन्हें पहचानकर ही हम अंचल, देश और विदेश की भिन्नता तथा अभिन्नता से एक सगापन कायम कर पाते हैं और अपने भाव जगत की सरहदें बढ़ते चलते हैं।

मणि मोहन सरीखा काम ही वैश्विक नागरिकता का विधान गढ़ रहा है। आईये, हम आप इसमें शामिल होते हैं -कला समय।

1. बीमारी

डॉक्टर, मैं महसूस कर रहा हूँ
कि कुछ घातक घट रहा है
मेरे ज़ेहन के आस-पास
हर एक अंग दु:ख रहा है,
दिन के वक्त सूर्य पीड़ा में है,
रात को चाँद और सितारे।
आसमान में
उस बादल के टुकड़े में
मैं महसूस कर रहा हूँ एक टांका
जिस पर मैंने कभी ध्यान नहीं दिया
हर सुबह जागता हूँ
मैं ठंड के अहसास के साथ।
बेकार ही लीं मैंने तमाम दवाएं
मैंने नफरत की, प्रेम किया,
पढ़ना सीखा
और ढेर किताबें पढ़ डालीं
संवाद किया लोगों से,
थोड़ा बहुत चिंतन भी,
मैं सहृदय रहा और खूबसूरत भी
परन्तु इन में से
कुछ भी काम नहीं आया डॉक्टर!
और ये तमाम साल यूँ ही गुजर गए,
डर का वाज़िब कारण है मेरे पास
मैं जिस दिन जन्मा
मृत्यु से ग्रस्त हो गया था ।

2. यह रास्ता

मन में कुछ विचार करते हुए
हाथों को पीछे बांधे
मैं चलता हूँ रेल की पटरियों के
बीचों बीच
एक दम सीधे रास्ते पर
पूरी गति के साथ
ठीक मेरे पीछे
आती है ट्रेन
जिसे कुछ भी नही पता मेरे बारे में
यह ट्रेन
कभी नहीं पहुंच पायेगी मुझ तक
क्योंकि मैं हमेशा थोड़ा आगे रहूंगा
उन चीजों से
जो सोचती नहीं हैं
फिर भी
यदि यह पूरी निर्दयता के साथ
गुजर जाती है मेरे ऊपर से
तब भी
रहेगा कोई न कोई हमेशा
अपने ज़ेहन में ढेर चीज़ें लिए
हाथ पीछे बांधे
इसके आगे चलने को तैयार
मेरे जैसा कोई
हर वक्त
जबकि यह काला दैत्य
भयानक गति से करीब आ रहा है
पर कभी भी
पकड़ नहीं पायेगा मुझे ।

कथा निरन्तर

कथा मध्यप्रदेश

अविभाजित मध्यप्रदेश के कथाकारों पर केन्द्रित वृहद कथाकोश

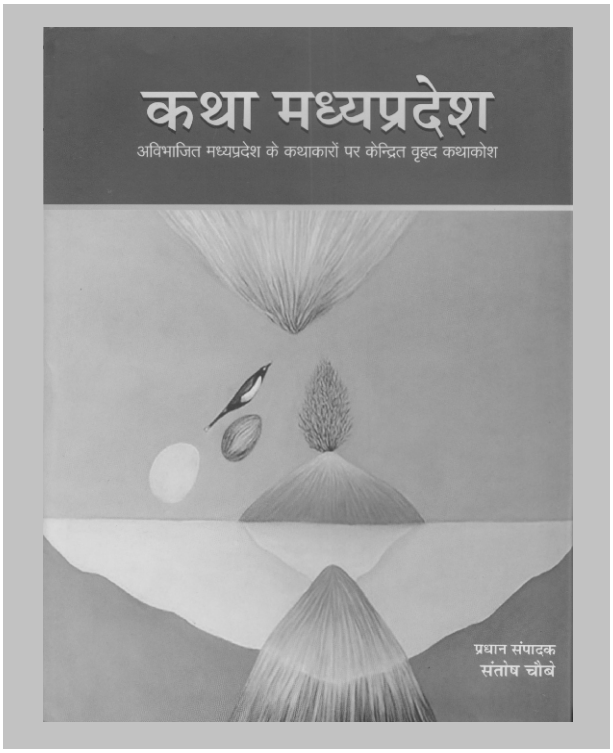

कथा मध्यप्रदेश अविभाजित मध्यप्रदेश के कथाकारों का ऐसा कथाकोश हैं जिसमें हिन्दी कथा के प्रणेता माधवराव सप्रे की कहानी से लेकर वर्तमान में लिख रहे युवतर कथाकारों की कहानियों को लिया गया है। माधवराव सप्रे, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, सुभद्राकुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली', मुक्तिबोध, नरेश मेहता, हरिशंकर परसाई, शानी, शरद जोशी, श्रीकान्त वर्मा, मन्नू भण्डारी, ज्ञानरंजन, विनोद कुमार शुक्ल, गोविन्द मिश्र, सत्येन कुमार, उदय प्रकाश, नवीन सागर, ज्ञान चतुर्वेदी, मुकेश वर्मा आदि और वन्दना देव शुक्ल, रवि बुले, वन्दना राग, राजुला शाह, गीत चतुर्वेदी, आशुतोष मिश्र, मोहन सगोरिया और कविता जैसे युवा कथाकार इस आयोजन में शामिल हैं। कथा मध्यप्रदेश, कथा विरासत, कथा साठोत्तरी, समकालीन कहानी-1, समकालीन कहानी-2, समकालीन कहानी-3, युवा कहानी-1, युवा कहानी-2 जैसे हिस्सों में बंटा हैं। प्रस्तुत कहानियाँ स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व और उसके बाद के आज तक के समय का ऐसा आईना है जिसमें हम अपने समय के सच का अक्स देख सकते हैं। इस अक्स में हम समय के उतार चढ़ाव के बीच आदमी का ऐसा रूप पाते हैं जिसमें प्यार-मुहब्बत के साथ ही ईर्ष्या-द्वेष का ऐसा ज्वार भाटा है जिसके दबाव में वह इंसान के दरजे से नीचे गिरता और सम्हलता नजर आता है। इस गिराव-डिके में व्यवस्था के वें कारक हैं जो उसे बना रहे हैं। कथा मध्यप्रदेश की कहानियाँ इसी इंसान का मानचित्र प्रस्तुत करती हैं जो प्रदेश-देश की सीमा की बाड़ को तोड़ता वैश्विक धरातल पर खड़ा दीखता है। इन कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी स्थानीयता हैं। व्यंग्य की तीखी धार और उसमें विभिन्न बोलियों का वह टच हैं जो हिन्दी गद्य के सौन्दर्य को नई आभा से दीप्त कर देता है। वे छोटे-छोटे मसलों को कलाहीन कला और रूपक-फैंटेसी के माध्यम से जवाब देती है जिसमें अपनी जातीय गद्य-पद्य परम्परा की खुशबू नजर आती है।

कथा मध्यप्रदेश सौ वर्षों का एक रचनात्मक इतिहास है। छः खण्डों और तकरीबन बाइस सौ पृष्ठ के इस दस्तावेज में 229 कथाकारों की हिस्सेदारी हैं। 30 आलोचकों के आलोचनात्मक लेख हैं जो रचना को राह दिखाते समय की टीका प्रस्तुत करते हैं।

यह हमारा विनम्र प्रयास है लेकिन इस उम्मीद के साथ कि -when me they fly I am their wings.

- संतोष चौबे

कहानी

जिल्दसाज़

जगन्नाथ प्रसाद चौबे 'वनमाली'

जन्म : 1 अगस्त सन् 1912 ई.
शिक्षा : एम.ए. (अंग्रेजी साहित्य)
देहान्त : 30 अप्रैल सन् 1976 में ब्रेन हैमरेज से

1930-60 के बीच सशक्त कथा-लेखन। 'कहानी', 'सरस्वती', 'विश्वमित्र', 'माधुरी', इत्यादि पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से प्रकाशित। सौ से ऊपर कहानियाँ, व्यंग्य-लेख और निबन्ध प्रकाशित। अनुभूति की तीव्रता, कहानी में नाटकीय प्रभाव, सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक समझ और विश्लेषण की क्षमता इनकी कहानियों के मूल तत्त्व रहे हैं।

साहित्य के अलावा शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य। मध्य प्रदेश के अग्रगण्य शिक्षाविदों में। शिक्षक, प्रधानाध्यापक और उपसंचालक के रूप में बिलासपुर, खण्डवा और भोपाल में कार्य। 1962 में शिक्षक दिवस पर राष्ट्रपति पुरस्कार से विभूषित।

निधन के बाद 'जिल्दसाज़' एवं 'प्रतिनिधि कहानियाँ' शीर्षक से दो कहानी संग्रह एवं दो खंडों में 'वनमाली समग्र' प्रकाशित।

(1)

वह अधेड़ जिल्दसाज़ सबेरे से शाम तक और अंधेरा होने पर दिये की रोशनी में बड़ी रात तक, अपनी छोटी-सी दुकान में अकेला एक फुट लम्बी चटाई पर बैठा किताबों की जिल्दें बाँधा करता। उसकी मोटी व भद्दी अंगुलियाँ बड़ी उतावली से अनवरत रंग-बिरंगे कागजों के पन्नों में उलझती रहतीं और उसकी धुंधली आँखें नीचे को झुकी काम में व्यस्त रहतीं।

जिल्दसाज़ का स्वभाव रूखा था व स्वर तीखा। ग्राहकों को अपनी मजूरी के जो दाम वह एक बार बता देता, उनमें कमी-बेशी न करने की उसे एक जिद-सी थी। लेकिन ग्राहक उसकी इस जिद और रूखाई पर भी उसके यहाँ किताबें डाल जाते; क्योंकि जिल्दसाज़ वास्तव में किताबों की जिल्द बहुत सुन्दर बाँधता था। किताबों की जिल्द बाँधना ही उसके एकाकी विरक्त जीवन में सत्य था। और सत्य ही तो सुन्दर होता है।

एक दिन सबेरे जिल्दसाज़ नित्य की भाँति अपनी दुकान में बैठा काम कर रहा था कि इतने में एक स्त्री उसके सामने आ खड़ी हुई। उसके साथ उसका आठ साल का बालक भी था।

स्त्री ने पूछा-''क्यों जिल्दसाज़, रहीम की किताब की जिल्द तुम्हीं ने बाँधी है?'' जिल्दसाज़ ने नज़र ऊपर की।

रहीम? रहीम कौन? वह किसी रहीम को नहीं जानता। न जानने की उसे ज़रूरत ही है। यह कैसी पागल स्त्री है। काम की बात क्यों नहीं करती? उसके पास तो काम है। काम को लेकर ही वह जीता है। काम ही उसे सही रास्ते पर ले जा रहा है। उसके पास ऐसी कहाँ फुरसत, जो वह किसी से अपना सरोकार जोड़े। जिल्दसाज़ बोला-''मुझे नहीं मालूम। तुम अपना काम बताओ।''

स्त्री जिल्दसाज़ के रूखे जवाब से झेंप गयी। उसने बताया- ''भाई, रहीम की किताब की जिल्द

देखकर मेरा लड़का भी अपनी फटी किताब की जिल्द बँधाने के लिये जिद पकड़े हुए है। यह रही किताब। बताओ, क्या लोगे?''

जिल्दसाज़ ने स्त्री के हाथ से किताब लेकर उसे उल्टा-पल्टा। तब लापरवाही से उसने यह कह दिया- ''छै आने पैसे होंगे।''

जिल्दसाज़ के लिये सौदा तय रहा, इससे वह काम में लग गया।

पर स्त्री के पास तो पैसों का सवाल था।

वह बोली-''भाई, छै आने तो बहुत होते हैं। मैं मेहनत-मजूरी करके पेट पालने वाली कहाँ से पाऊँगी? मुझसे तीन आने ले लेना। मैं तुम्हारा बड़ा गुन मानूंगी।''

जिल्दसाज़ भुनभुना उठा।

उसकी बात को दुलखने वाली यह स्त्री कौन होती है? उसकी बात आज तक किसी ने नहीं दुलखी। हमेशा उसे मुंह मांगे दाम मिले हैं। उसने जो चाहा है, वह ग्राहकों ने खुशी से दिया है। और क्यों न देंगे? वह क्या कोई काम में खोट करता है? तब इस स्त्री का उसकी हेठी करने का क्या मतलब? काम की बात में गुन-एहसान की क्या बात? उसका सम्बन्ध तो इस दुनिया से अब तक लेन-देन का रहा है। वह तो केवल अपनी मजूरी और चोखे काम को चीन्हता है। उसे दया और एहसान की बात क्या मालूम?

जिल्दसाज़ ने बताया- ''छै आने से मैं एक कौड़ी भी कम नहीं लूंगा।''

स्त्री ने आजिजी की- ''भाई, खुदा तुम्हें बहुत देगा। तुम्हारी मेहरबानी से मेरे बच्चे का दिल रह जायगा।''

जिल्दसाज़ इस बार चिढ़ गया।

खुदा? खुदा को वह क्या जानता है? कुल जमा उसने अपनी दुकान से ही जीने के लिए पूंजी पायी है। रोजगार, किताबें, कागज बस इन्हीं के बीच तो उसकी ज़िन्दगी के लम्बे-लम्बे बरस कटे हैं। उसने तो कभी नहीं महसूस किया कि इस ज़िन्दगी को चलाने के लिए खुदा की भी कहीं किसी तरह से जरूरत पड़ती है। तब खुदा क्या खाक मदद करेगा?

जिल्दसाज़ झल्लाकर बोला- ''मैं खुदा-उदा की बात नहीं जानता। जब तेरे पास पैसे ही नहीं थे, तब तू यहाँ क्यों आयी? जा, सिर ना खा। काम करने दे।''

जिल्दसाज़ फिर किसी किताब के पन्ने ठीक से जमाने लगा।

लेकिन इस तरह से डांटे जाने पर भी स्त्री वहाँ से नहीं टली और उसका बालक भी उसी तरह घबराहट से अपनी माँ का हाथ पकड़े खड़ा रहा। स्त्री कभी काम करते जिल्दसाज़ को देखती और कभी उसकी निगाह जिल्दसाज़ की जालों और गर्द से भरी दुकान की दीवारों से टकराती। एकाएक कोई बात उसे सूझ गयी।

स्त्री ने सहमते-सहमते पूछा-''अच्छा, भाई बाकी बचे तीन आने में मैं तुम्हारी दुकान झाड़-बुहार दूंगी और जाले व गर्द साफ कर दूंगी। तब तो तुम मेरे बच्चे की किताब की जिल्द बाँध दोगे?''

जिल्दसाज़ अब सचमुच असमंजस में पड़ गया। ऐसा गरीब ग्राहक उसकी जिन्दगी में अब तक नहीं गुज़रा था। उसने काम छोड़ स्त्री पर निगाह डाली। अचानक उसकी दिल की बस्ती में नमी छा गई। उसने पहली बार स्त्री के दीन और निस्सहाय चेहरे को देखा। उसकी पैबन्दों से भरी ओढ़नी को परखा। लड़के का मासूम और बेबस चेहरा भी उससे छिपा नहीं रहा। जिल्दसाज़ के अन्तर में आज पहली बार रहम बरस पड़ा।

जिल्दसाज़ तब अपने को छिपाते हुए बोला- ''अच्छा दो किताब। मैं मुफ्त बाँध दूंगा। कल आकर तुम ले जाना।''

जिल्दसाज़ फिर किताब ले, बिना उस स्त्री और बालक की ओर देखे, झट कागजों की कतरन में कोई चीज़ खोजते खो गया।

(2)

दूसरे दिन वह स्त्री अपने बालक के साथ किताब लेने आयी। जिल्दसाज़ ने किताब निकाल बालक को दे दी।

बालक किताब देख खुशी से नाच उठा।

बोला- ''इतनी सुन्दर जिल्द तो माँ, रहीम की किताब की भी नहीं बँधी।''

माँ अपने बच्चे की खुशी में फूल उठी। वह जिल्दसाज़ से बोली- ''भाई खुदा तुम्हारी रोजी में बरकत दे।''

किन्तु जिल्दसाज़ यह सब कुछ नहीं देख सुन रहा था। वह इस ध्यान में उलझा था कि इन दो परदेशियों से किसी अनजाने क्षण में उसकी जो पहचान जुड़ गयी है, वह क्या यहीं टूटकर खत्म हो जायेगी? वह अब अपने अकेलेपन से ऊब उठा था। उसके लिए अब जगत का कोई अर्थ हो आया था। उसका मन अब रोजी को ही सब कुछ मानने से इन्कार करने लगा। उसके अन्दर एक निराली प्यास उठ आयी थी। उसे मालूम पड़ रहा था कि वह प्यास किसी से अपना सरोकार जोड़कर ही शान्त की जा सकती है।

जब स्त्री बन्दगी करके चलने लगी, तब जिल्दसाज़-जैसा रूखा आदमी भी विकल हो उठा। उसने रुकते-रुकते कहा- ''तुम कहाँ रहती हो?''

स्त्री का जबाव हुआ- ''इसी मुहल्ले में रहती हूँ। आपकी दुकान से पन्द्रह-बीस घर छोड़ करके।''

''तुम्हारे खाविन्द क्या करते हैं?'' - जिल्दसाज़ ये पूछते हुए इधर-उधर झांक रहा था।

स्त्री ने बताया-''मेरे खाविन्द का इन्तकाल हुए तो चार बरस होने आये।''

''तो तुम गुज़र कैसे करती हो?'' जिल्दसाज़ का यह तीसरा प्रश्न था।

स्त्री बोली-''मैं बेलें बनाती हूँ बूटे काढ़ती हूं और जरी का काम भी कर लेती हूँ। मगर आजकल यह मजूरी भी मुश्किल हो गयी है।'' ज़िल्दसाज न जाने कुछ देर तक क्या सोचता रहा। तब उसने कहा- ''तो सुनो। अगर तुम्हें उज्र न हो तो बगल वाला मेरा जो कमरा खाली है, उसमें तुम आकर रह सकती हो। मेरे लिए तुम रसोई बनाना। मैं ऊपर से तुम्हें चार रुपया महीना दूंगा।''

स्त्री एक बारगी इतनी ढेर-सी मेहरबानी न सह सकी। उसका सिर कृतज्ञता के भार से झुक गया। वह धीमे स्वर में बोली- ''शुक्रिया करती हूँ। आपने मुझ गरीब औरत को उबार लिया।''

आज जब स्त्री और उसका बालक खुश होते हुए घर चले गये, तब जिल्दसाज़ सूना-सा, खोया सा, लोगों की आती-जाती भीड़ को देखता अपनी उसी एक फुट चटाई पर सिकुड़ा अकेला बैठा था।

(3)

अगले दिन वह स्त्री अपने कपड़े लत्तों का एक टीन का बक्स, एक बिस्तर तथा दो-चार एलूमीनियम के बरतन ले जिल्दसाज़ के यहाँ चली आयी।

जिल्दसाज़ की ज़िन्दगी में एक नया ज़माना आया। उसका बर्ताव अब अपने ग्राहकों से रूखा नहीं होता था। वह बड़ी मुलायमी से उनसे पेश आता। दामों के लिए भी वह अब पहले के समान ज़िद नहीं करता। उनमें कमी-बेशी करके भी वह लोगों की किताबें डाल लेता।

जिल्दसाज़ जब किताबों की ज़िल्द बाँधने बैठता, तब वह पहले-जैसा एकाग्र चित्त नहीं रहता। बीच-बीच में वह बच्चे का पाठ सुनता और कभी उसके माँग करने पर उसे रंगीन कागजों की नावें व दवातें बनाकर देता। जिस दिन खेल तमाशा होता, उस दिन वह बालक को अपने साथ लिवा ले जाकर तरह-तरह के खिलौने व मिठाइयाँ दिला लाता।

शाम को जब वह काम से ऊब जाता, तब दुकान बंद कर देता। मुंह-हाथ धोकर नमाज पढ़ता व झुटपुटे में दुकान के चबूतरे पर बैठा आते-जाते लोगों को देखा करता और न जाने क्या सोचा करता।

रात होने पर वह बड़ी चाह से घर के भीतर रोटी खाने जाता। उसके साथ उस स्त्री का बालक रज्जब भी खाने बैठता। खाते-खाते जिल्दसाज़ भोजन की आलोचना करता और स्त्री शर्माती-सी उसकी बातों का जवाब देती। उस समय जिल्दसाज़ के नीरस-विरक्त जीवन में रस ही रस छलका दीख पड़ता।

एक दिन जिल्दसाज़ ने खाते-खाते रज्जब की माँ से पूछा- ''क्यों जी, तुम्हारा नाम क्या है? यह तो तुमने कभी नहीं बताया।''

स्त्री ने भेदभरी हँसी हँसकर कहा-''नाम जानकर क्या करियेगा?''

जिल्दसाज़ जैसे पकड़ा गया। वह बोला-''नाम का क्या किया जाता है? मैं उसी नाम से पुकारूंगा। और क्या?''

स्त्री ने तब चूल्हे की आग तेज करते हुए बताया- ''गुलशन''।

''अच्छा, तो मैं तुम्हें अब 'गुल' कहकर पुकारूंगा।'' जिल्दसाज़ ने बड़ी संजीदगी से कहा।

गुलशन के गोरे गाल लाल हो गये। सुन्दर बाँकी आँखों में चिन्ता छा गयी। उसने बड़ी धीमी महीन आवाज में कहा-''नहीं नहीं। इस नाम से मेरे खाविन्द मुझे पुकारा करते थे।''

जिल्दसाज़ के मुंह से निकला-''तो?''

स्त्री कभी ऐसे आमने-सामने नहीं हुई थी। बोली-''तो क्या?''

जिल्दसाज़ ने इस बार गुलशन की आँखों में आँखें डालकर कहा-''तो तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें उस नाम से न पुकारूँ? यह नहीं होने का। मैं तुमसे निकाह करना चाहता हूँ, पागलपन नहीं। बोलो, मंजूर है?''

रज्जब की माँ के लिये यह एक समस्या हो गयी। अभी तक, आज तक उसने एक सेविका की भाँति जिल्दसाज़ को प्रसन्न रखने की कोशिश की थी। उसकी हँसी का अपनी हँसी से उत्तर दिया था।

गुलशन ने सफाई दी-''मुझे माफी दो। मुझे इन काँटों में न घसीटो। मुझ बेकस को यों ही पड़ी रहने दो।''

जिल्दसाज़ का जोश गुलशन के जवाब से एकाएक ठंडा पड़ गया। लेकिन तब भी उसके भीतर के स्वर को ठेलते हुए जैसे उसने पूछा-''तो क्या तुम मुझे बिल्कुल नहीं चाहतीं?''

''नहीं, सो बात नहीं। मैं तुम्हारी दिलोजान से सेवा करूंगी। तुम्हारी हँसी का जवाब हँसी से दूंगी। मगर तुमसे अर्ज है, तुम मुझसे मेरे खाविन्द की याद ना छीनो।'' गुलशन की सुन्दर आँखों में करुणा बरस रही थी।

जिल्दसाज़ एकदम टूट गया। लेकिन बुझते दीपक के क्षणिक आलोक जैसे उत्तेजित स्वर में वह बोला-''अभी तक मैंने इस दुनिया से कुछ नहीं पाया। आज आखिरी मर्तबा तुम्हें प्यार किया है, सो तुम भी मुझे ठुकराकर चूर-चूर कर देना चाहती हो। बोलो, क्या मैं तुम्हारी थोड़ी सी दया का भी अधिकारी नहीं?''

गुलशन बस इतना ही कह सकी-''मुझे माफी दो।''

जिल्दसाज़ निरुत्तर हो गया।

मिलन के आरम्भ में ज़िल्दसाज़ कठोर था और मिलन के अन्त में रज्जब की माँ।

जिल्दसाज़ अब भी किताबों की जिल्द बाँधा करता था और अब भी उसके पास ग्राहक आते थे, किन्तु अब न तो वह उतनी सुन्दर जिल्दें बाँधता था और न उसके पास पहले-जैसे ग्राहक आते थे।

कहानी की तकनीक

सन् 1940 में वनमाली द्वारा 'माया' के संपादक रामनाथ 'सुमन' को लिखे पत्र से.

'पूज्य सुमन जी,

सादर नमस्ते। एक मुद्दत के बाद आपकी चिट्ठी मिली, कहानी छप गयी है, सो जानकर प्रसन्नता हुई। मगर छपने के पहले की या बाद की क्रिया छूट गयी है, यह देखकर कुछ खराब भी लगा। आपको अपनी कहानियों के प्रति ऐसा impersonal हो जाते देखकर मुझे सचमुच भय होने लगा है कि मुझे ज़रूर अपने पाठकों को पैदा करने की बात सोचनी चाहिए। गुस्ताखी माफ हो, तो मैं एक सवाल करूँ। जब आप जैसे आदमी मेरे कुछ निकट हों, तब क्या कहानी का केवल छपना ही मेरे लिए एकमात्र सत्य होना चाहिए?

मैं इस बार आपकी बात और अधिक स्पष्ट ढंग से समझ गया हूँ, किन्तु आगे चलकर आपने अपनी चिट्ठी में लिखा है- ''समालोचना की भाँति इनका महत्व है।'' मेरी जिज्ञासा है कि कहानी में पहुँचकर भी क्या यह समालोचना, यह आलोचना और विश्लेषण वही बना रहता है? क्या उस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं होती? क्या उसका कोई संश्लिष्ट रूप नहीं बनता? क्या वह मिलकर अपनी कोई दुनिया नहीं खड़ी करता? यदि नहीं, तो सचमुच खतरे की बात है। मैं खुद महसूस करता हूँ कि प्लॉट और चरित्र के नाम पर मेरी कहानियों में बहुत थोड़ी चीज़ है- वातावरण की शायद मैंने कहीं-कहीं कोशिश की है, किन्तु मेरी कोई बात प्रबल हो पड़ी है, तो यह आलोचना और विश्लेषण। शायद यह दोष

मेरी दृष्टि का हो। मेरे लिए जीवन नाम की चीज बड़ी gross है। वह शायद टुकड़ों में, प्रत्यालोचना में ही दिख जाता है, तो दिख जाता है। और फिर कहानी में मैं सब बातें छोड़ने को तैयार हूँ पर उसमें intensity और dramatic element का होना मैं बहुत लाजिम समझता हूँ। शायद ये दो चीज़ें ही कहानी की technique की जान है। मैं यह नहीं कहता कि जीवन तत्व अपने पूरे रूप में इन बातों में बाधा डालता है। किन्तु मेरे दिमाग में वह आलोचना और विश्लेषण ही बनकर आता है। क्या बताऊँ, filter का ही दोष समझिये। आदमी चाहकर भी कभी-कभी वह चीज़ नहीं दे पाता, जो वह देना चाहता है।

आपकी बताई कहानियों पर (कौशिक जी की कहानियों पर) भी मैं कुछ कहना चाहूँगा। मैंने भी उन तीनों कहानियों को पढ़ा है। उन तीनों में मुझे ''उस लोक की छाया'' से ही अधिक मजा मिला है। मुझे बड़ा दुख है कि मैं आज तक भी कौशिक जी को appreciate नहीं कर सका। यह लेखक का कैसा अभाग्य है कि जिसने इतनी कहानियाँ लिखी हों, उसकी दो-चार कहानियाँ भी मन में न घूमें। कौशिक जी में intensity के नाम पर तो मुझे कुछ मिलता ही नहीं, जैसे कहानी उनके लिए एक सपाट रास्ता है, जिसके आजू-बाजू सूखा लम्बा मैदान है। इसी से चरित्रों के प्रति पूरी संवेदना नहीं उमड़ती। ऐसा मालूम पड़ता है कि लेखक किसी खास परिणाम की ओर ढकेल रहा है। कभी-कभी तो मन उस परिणाम में भी अविश्वास करने लगता है। यही बात 'गँवार' की है। उसके सम्बन्ध की सारी बातें बनी-बनायी दिखती हैं। दिल उन्हें मानने से इन्कार करता है। मैं यह नहीं कहता कि ऐसे भोले simpleton दुनिया में हैं ही नहीं, पर उनका भोलापन जी में भरना चाहिए। फिर दुनिया जब इतनी दूरी लाँघ आयी है, तब क्या इसी भोलेपन को सत्य होना चाहिए। यह भी सत्य हो सकता है, पर किसी दूसरे ढंग से, किसी अन्य तरीके से।

दूसरी कहानी ''आज उसका ब्याह है'', हो सकता है कि average पाठक को इसने खूब स्पर्श किया हो, पर क्या average पाठक को मानकर चलना ही सत्य है? जब इसे मैंने पढ़ना शुरू किया, तो दो-एक पेज तक अच्छी लगी, पर बाद को यह बड़ी गड़बड़ दिखी। मैं मानता हूँ कि लेखक ने सब कुछ, जितना उससे बना, उतना ठीक ढंग से रखा है, पर घटनाओं और चरित्रों के गुम्फन में क्या कहानी नाम की वस्तु खो नहीं गयी है? शरद बाबू की कहानियाँ भी लम्बी चौड़ी हैं, पर उनमें यह घटाटोप बुरा नहीं लगता। यहाँ मुझे लगता है कि कौशिक जी की कहानी बिल्कुल flat हो गयी है। इसी flatness के कारण मैं कहानी को खतम हुआ मानता हूँ।

तीसरी कहानी अपने अन्तिम अंश में बड़ी सुन्दर है। शायद उसको निकाल दिया जाय, तो मैं कहानी में कुछ नहीं देखता हूँ।

मैंने अभी तक तीन कहानियाँ आपके पास भेजी हैं, चौथी ''ज़िन्दगी'' आपको मिली होगी। इनके जवाब में मुझे एक ही स्वर की अनुभूति हुई है- ''पसन्द पसन्द''। मगर आदमी क्या ऐसा अच्छा है कि वह अपनी बुराई देखना नहीं चाहेगा? तब वह बुराई, वह आलोचना मुझे क्यों नहीं मिल रही है। कल्पना का क्षेत्र विस्तृत हो, इसके सिवाय कुछ और? आपके पास समय का तकाजा हो सकता है, मगर समय क्या मुझसे अधिक 'पर्सनल' है?'

- स्रोत: विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, भोपाल, (म.प्र.) ■

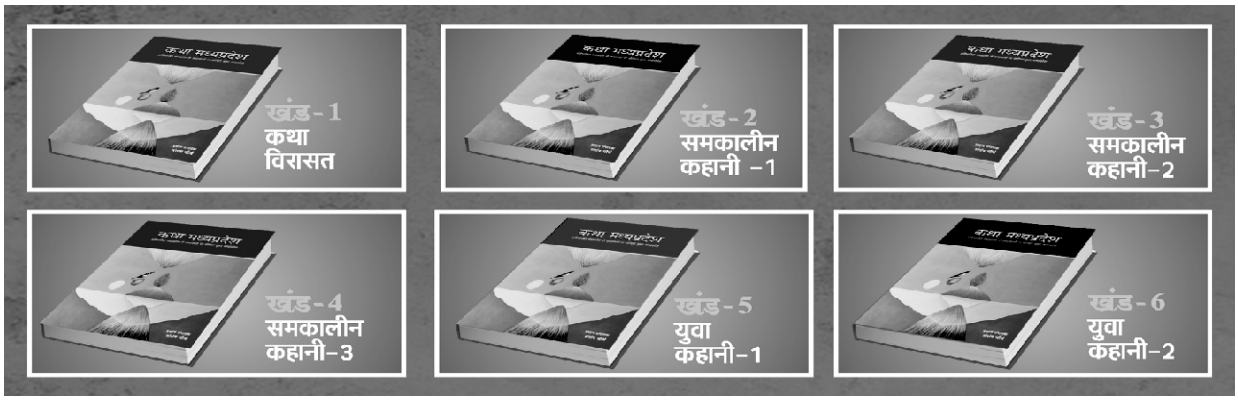

साक्षात्कार

कैप्टन विश्वास राय से लक्ष्मीकांत जवणे की बातचीत

'बाहुबली' और 'दंगल' पर लोगों का रीझना एक सनसनी की तरह घटित हो गया। फुर्सती तथा व्यस्त दोनों ने अपने अपने समय का एक हिस्सा सिने-थियेटर में और मूवी देखने के बाद सिने-थियेटर के बाहर खर्च किया।

सिने-थियेटर के बाहर लोगों की बातचीत में 'बात पर बात का रुख' सीधे सीधे या घुमा फिरा कर 'कैमरे' पर केन्द्रित हो गया। कैमरा सचमुच वह मशीन है जिसकी टेक्नीक के, क्राफ्ट तथा आर्ट से रिश्तें एक बराबर होते हैं।

एक हटकर बात यह हुई कि बातचीत के जरिये अपनी खुशी बांटने वाले ये लोग निष्णात कला समीक्षक नहीं थे, ये 'स्टिल चित्रांकन' की बजाय फोटोग्राफी के जरिये जिस रफ़्तार या गति से आनंदित हुए, उसके मुरीद थे। आपसदारी में वे बड़ी उमंग से कहते हैं कि भाई जीवन एक आर्ट है लेकिन जोखिम और रफ़्तार के बिना भी जीवन कोई जीवन है ?

कला के सन्दर्भ में जोखिम और रफ़्तार की पड़ताल ने सुझाया - 'एयर क्राफ्ट'। 'एयर क्राफ्ट' को सिरा बनाकर जब कदम बढाए तो ये ही पड़ताल ले पहुँची कैप्टन विश्वास राय तक रिस्क और स्पीड जिनके अधीन रहती है। मृदुल परन्तु दृढ व्यक्तित्व। पॉयलट। विमान चालक। इस समय माननीय मुख्यमंत्री (मध्यप्रदेश शासन) श्री शिवराज सिंह चौहान तथा अन्य अति महत्वपूर्ण शख्सियतों को हवाई रास्तों से गंतव्य तक पहुंचाते हैं।

'मैं मानता हूँ कि उड़ान एक कला है'

आपका नाम 'विश्वास' आपके काम की भी पहली व अनिवार्य कंडीशन होती है। प्लीज, अपने बारे में कुछ आम और कुछ ख़ास साझा कीजियेगा ?

= काम के लिये काम में एक डलनेस पाई जाती है। मेरे लिए फ्लायिंग मेरा शौक है, हॉबी है, चॉइस है। मैं अपने जॉब से लगातार इंस्पायर (प्रेरित) होता हूँ। थकान कभी महसूस नहीं होती। अपना हंड्रेड परसेंट काम को देता हूँ।

मजेदार बात यह है कि इस काम में 'सॉरी' के लिए कोई जगह ही नहीं है। आम जिन्दगी में 'सॉरी' वर्ड दूसरा मौका हासिल करने के लिए इस्तेमाल होता है।

पॉयलट के काम में 'सॉरी' उस आख़िरी मुहर या स्टाम्प की तरह होती है जो साबित करती है कि गलती हुई है और यह पहली और आख़िरी गलती है।

(मुस्कुराते हुए) पॉयलट का कॉन्फीडेंस 'विश्वास' खुद से और साथ में बैठने वाले, दोनों से मिलकर बनता है।

- **बचपन, किशोरावस्था फिर स्टडी कम्पलीट होने के बाद मतलब नौजवानी इन तीनों स्टेज पर 'आपको क्या बनना है ?' इस विचार को लेकर कौन से बदलाव हुए और क्यों ?**

– पांचवीं तक तो इस तरह का कुछ समझता ही नहीं था। आगे भी एक अरसे तक कोई डायरेक्शन नहीं, कुछ नहीं। पर मुझे अच्छी तरह याद है काम को लेकर कुछ सनकी सा था मैं, एडिक्ट जैसा। (वही मुस्कराहट) करते रहो..करते रहो, जब तक रिजल्ट पा न लो। ठान सा लेता था मैं, पाना है मतलब पाना है। ऊपर से जो 100 लोग करें वो भी नहीं करना है। हाँ, पैरेंट्स के पास शिकायत ना जाए इस चीज को लेकर मैं कुछ ज्यादा ही चौकस था, मैं कोई भी ऐसा काम पसंद ही नहीं करता था, जिसमें शिकायत जैसी कोई बात हो।

मैं अपने साथी स्टूडेंट्स और टीचर्स में पॉप्युलर रहा। कारण शायद यही था कि मैं वह सब करता था जो बाकी लोगों के लिए कठिन था और अपने टीचर्स तथा बड़ों का बहुत रिगार्ड्स करता था।

(सब पर एक नज़र डालकर) मेरी भगवान पर बहुत आस्था है।

- **स्टडी के दौरान आपकी हॉबीज़ क्या थी ?**

– मैं वैसे एक औसत छात्र था पर मैं खेलों को काफी समय दिया करता था। बेसिकली मैं एक एथलीट रहा हूँ, स्टेट लेवल पर रिप्रजेंट कर चुका हूँ। क्रिकेट पर क्रश रहा है। स्वीमिंग और बेडमिन्टन भी मुझे पसंद थे। एक संयोग साथ साथ चलता रहा कि सारे ग्रुप गेम्स में मैं ही कैप्टन हुआ करता था जिससे सहज भाव से लीडरशीप क्वालिटी की गिफ्ट मिल गयी ।

- **क्या ऐसा लगता है कि डायरेक्टली अथवा इन-डायरेक्टली इन हॉबीज़ की कोई भूमिका रही, आपके वर्तमान कॅरियर बनने या बनाने में ?**

– मैं जब 7 वीं 8 वीं क्लास में था, हमारे कल्चुरी समाज के समारोह में जाना हुआ, वहां श्री मान विक्रम पेठिया जी से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। वे हमारे समुदाय के पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने फाईटर फ्लाईट तक अपना एक मुक़ाम हासिल किया हुआ

था। पेठिया जी से पहली बार 'फ्लाईंग' जैसी अमेज़िंग चीज का पता लगा, उन्होंने जो भी कहा उसमें मेरे लिए सब गज़ब ही गज़ब था। मुझे ऐसा लगा कि उन्होंने एक 'फ्रेम' एक्सप्लेन किया जिसमें मैं बिलकुल 'फिट' बैठ रहा था।

आज तक मैं सिर्फ एक बात नहीं समझ सका कि क्या मेरे सिक्स्थ स्टेंडर्ड से 'प्लेन के स्टिकर्स' कलेक्शन और पेठिया सर से मुलाक़ात में कोई रिलेशन है ?

लोगों की कही एक और बात मेरे बालपन वाले मन में टिकी थी कि मैथ्स-साईंस से कॅरियर के बहुत सारे रास्ते खुले मिलते हैं।

था तो मैं हठी।

मैथ्स-साईंस और उड़ान।

जानकारी मिली, एन सी सी के 'सी' सर्टिफिकेट से फ्लाईंग के मौके मिलना आसान हो जाता है, मैंने एयर विंग एन सी सी ज्वाईन कर ली। एन सी सी के माध्यम से एक स्कॉलरशीप का भी प्रोविजन होता है, मैंने इसके लिए बहुत परिश्रम करके खुद को सिद्ध किया, मेरी योजना का यह महत्वपूर्ण हिस्सा था।

एयर विंग एन सी सी के तीसरे वर्ष में 'सी' सर्टिफिकेट वाले पूरे मध्य प्रदेश के एन सी सी (एयर विंग) से जुड़े टेलेंटेड 100-125 केडेट्स में से कुछ चुनिन्दा केडेट्स को 30 घंटों की सोलो फ्लाईट बाजारिया स्कॉलरशीप का मौका मिलता है।

• समझा जाता है कि डिफेन्स रिसर्च डेवलपमेंट ऑर्गेनाइजेशन (डी आर डी ओ) द्वारा एक 'पॉयलट एप्टिट्युड बैटरी टेस्ट(पी ए बी टी)' डिवाईस किया गया है जो भारतीय वायु सेना के यान चालक होने के लिए अनिवार्य है। भारतीय वायु सेना के अतिरिक्त सिविल एवियेशन में भी क्या यह टेस्ट जरूरी है ? इसके बारे में समझाईयेगा ?

– पॉयलट एप्टिट्युड बैटरी टेस्ट (पी ए बी टी) यह एक ख़ास परीक्षण है जो इंडियन एयर फ़ोर्स में पॉयलट बनने के लिए अनिवार्य है। इसमें एप्टिट्युड यानि सहज रुझानों की पेशे के लिए उपयुक्तता, रीजनिंग मतलब विवेकशीलता और ब्रेन मेपिंग में

न्यूरो साईंस टेक्निक से केंडीडेट का अपनी नर्व्स पर उड़ान की परिस्थितियों में कंट्रोल का टेस्ट होता है।

पहले लगभग एक घंटे की ब्रीफिंग की जाती है फिर यह टेस्ट लिया जाता है। सिविल एवियेशन में यह टेस्ट नहीं होता।

- **सुनते हैं, 'पी ए बी टी' की, जीवन में सिर्फ एक बार ही परीक्षा दी जा सकती है इसमें महा महिम श्रद्धेय श्री एपीजे अब्दुल क़लाम का संस्मरण भी जुड़ा हुआ है। 'वंस इन अ लाईफ' के पीछे क्या लॉजिक हो सकता है ?**

– वेल सेड। यह जीवन में सिर्फ एक बार ही दिया जा सकता है।

ट्रूली,.. यह अत्यंत स्वाभाविक परिस्थितियों में लिया जाने वाला परीक्षण है, दुबारा लिए जाने पर यह केंडीडेट की तैयारियों से जा जुड़ेगा जो उसकी ओरिजनल क्षमताओं को रिप्रजेंट नहीं कर पायेगा।

इसमें फेल्युअर का कारण सामान्यतया केजुअल अप्रोच होती है। बस ।

महामहिम क़लाम साहब की बायोग्राफी, इंटरव्यूज और देश को मिले उनके कॉन्ट्रिब्युशन से पता लग जाता है कि वे एक अत्यंत असाधारण व्यक्ति थे। यह असाधारणता यथार्थ में उनका बचपन से 'प्रयोगधर्मी' होना है। प्रयोगधर्मी व्यक्ति चीजों को आजमाते हैं, स्वीकार नहीं करते।

- **यह टेस्ट देने का आपका अनुभव क्या है ?**

– नन। (फिर एक प्यारी हँसी) हम लोगों को यह टेस्ट नहीं देना पड़ता।

'पी ए बी टी' टेस्ट के तीन पार्ट होते हैं। 1.आई एन एस बी टी (इंस्ट्रूमेंट एंड बेटरी टेस्ट), 2.स्क्रीन टेस्ट, और 3.ड्रम टेस्ट। असल में इस तरह के टेस्ट में व्यक्ति को अपना 100 % देना होता है। मेमोरी, परफारमेंस और प्रजेंस ऑफ़ माईंड तीनों की सख्त एनालिसिस होती है , इसमें।

- **सिविल एवियेशन में एप्टिट्युड टेस्ट, फिर इन्सट्रक्टर के साथ पहली उड़ान, फिर पहली सोलो उड़ान इन सबके अनुभवों में क्या अंतर आपने महसूस किया ?**

– यह सवाल मेरे लिए बड़ा मिराक्युलस और फनी सा है।.....(कुछ सोचते हुए) .....

मैथ्स-साईंस लेकर मैं एन डी ए (नॅशनल डिफेन्स अकेडमी) के एक्ज़ाम में अप्पियर हुआ पर निकल नहीं सका। फिर औरों की तरह प्री इंजीनियरिंग टेस्ट का फॉर्म बाकायदे लेकर घर आया। फॉर्म नहीं भरा.....इन्जीनियर बनने की इच्छा ही नहीं थी। (हम लोगों की तरफ देख कर भी नहीं देखते हुए) पापा ने डाँटा डपटा। गधा और आवारागर्द जैसे एडजेक्टिव्ज़ भी लगे।

'पापा जो भी करूंगा और लोगों से अच्छा करूंगा।' यह जवाब उनको भी, था खुद को भी और मेरा संकल्प भी।

आपने जो सवाल किया उसका यह 'बेक ग्राउंड' है। अनुभव में रोमांच, पुलक, उत्तेजना, सिहरन

और जोशोख़रोश है।

हमारी एयर विंग एन सी सी का रायपुर (छत्तीसगढ़) में कैंप था। वहां माना एयरपोर्ट पर ग्लाईडिंग का सारा इंतज़ाम था। अमूमन एन सी सी के थर्ड यीअर केडेट को ग्लाईडिंग के मौके मिलते हैं। मैं एन सी सी फर्स्ट यीअर का केडेट था।

मिरेकल की शुरुआत हुई। हमारे कैंप कमांडेंट की जीप से टोचन किया जाना था। हम लोगों से पूछा गया कि कौन जीप चला सकता है? मैंने हाथ ऊपर उठा दिया। (हँसते हुए) लीवर पर डले गियर नंबर से मदद मिली। सेल्फ देखा हुआ था, क्लच दबाकर, पहले गियर में लेकर स्लो शुरुआत का सबक मन में दोहराते हुए स्टार्ट ले लिया और जीप चल पड़ी। कैंप कमांडेंट साहब हाईली इम्प्रेस्ड हो गए। रिवार्ड मिला जैसे लॉटरी खुल गयी। रिवार्ड था मुझे ग्लाईडिंग का चांस। एन सी सी फर्स्ट यीअर के केडेट को ग्लाईडिंग का चांस!!

ग्लाईडिंग का चांस मतलब चार मिनिटों की 'सॉर्टी'। एक लॉन्च में ग्लाईडर का एक चक्कर। इस तरह 'माना' एयरपोर्ट रायपुर, मेरे दिमाग पर सुनहरा परमानेंट टैटू बन गया।

खुशी के गोल गोल चक्कर मैंने पहली बार महसूस किये। मैं घूम रहा था या आसपास का माहौल फिरकी ले रहा था, तय नहीं कर पा रहा था। उसी शाम पहली बार मम्मी पापा को चिट्ठी लिखी।

सब कुछ बियोंड इमेजिनेशन लगा। तय कर लिया उस दिन कि सिर्फ और सिर्फ पॉयलट ही बनना है। लक्ष्य मुझमें समा गया और मैं लक्ष्य में।

अनुभव बड़े इन्टेन्सिव हैं ..... । उड़ान की लर्निंग में सारा इन्सट्रक्टर का विवेकाधिकार होता है। वह फील करता है कि लर्नर कब 'सोलो' के लायक है ? आमतौर पर इन्सट्रक्टर अपने साथ 15-20 घंटों की उड़ान के बाद ही लर्नर को एकल (सोलो) फ्लाईंग के लिए कम्पिटेंट समझता है।

मेरे इन्सट्रक्टर ने 11 घंटे 50 मिनट बाद ही एयरक्राफ्ट मेरे हवाले कर दिया था। आप कल्पना करें, आप ऑपरेट कर रहे हैं, इन्सट्रक्टर ठीक आपके बाजू में मौजूद है, एक एक्स्ट्रा कुशन की तरह। रन वे के छोर पर आप पहुंचते हैं, इन्सट्रक्टर रुकने का इशारा करते हैं, गति थमते ही बला की तेजी से उतरकर 'सोलो' के लिए ऑर्डर दागते हैं और ये जा वो जा। मैं फ्रीज़। सेकण्ड के फ्रेक्शन में पूरे शरीर में वाईब्रेशन की बाढ़ फील करता हूँ, जिसे रोकने के लिए कोई बाँध कोई डेम मेरे अन्दर इरेक्ट नहीं होता। अभी तक का मेरे भीतर बोया गया अनुशासन ही मुझे होश में लाता है, और 'आर्डर इज आर्डर' की घंटी मेरे दिमाग में बजती है और मैं स्टार बोर्ड (दाहिनी स्विच पेनल) और पोर्ट (बांयी स्विच पेनल) के साथ व्यस्त हो जाता हूँ।

अभी तो साथ थे इन्सट्रक्टर। इन्सट्रक्टर यानि एक चट्टानी शख्स, डांट डपट के खजाने के खजांची। शायद डांट डपट सिखाने की तकनीक का एक अहम् हिस्सा होती है। अप्रत्याशित, कि अब मैं अकेला प्लेन उड़ा रहा था।

जब मैंने यान रोका, मैं किसी तार वाले बाजे की तरह झंकृत हो रहा था। मैं अपनी सीट पर बन्दर की माफिक खूब उछला, मैंने सीट पर छोटे बच्चे की मानिंद हाथ फेरा, उसे चूमा। बेधड़क होकर चीखों में किलकारियां भरता रहा।

नीचे उतरकर अशांत मैं, साथियों से कब जा मिला, कब इन्सट्रक्टर साहब ने ए टी सी (एयर ट्रेफिक कंट्रोलर) को आसमान क्लियर रखने के लिए कहा होगा, मालूम नहीं।

(कुछ पल तक हम सभी एक आनंददायी, रोयें खड़ी करने वाली नीरवता (प्लीजेंट, गूज़बम्प्स वाली कामनेस) में डूबे रहे)

- **चॉपर और प्लेन दोनों को उड़ाने में तकनीकी अंतर तो होता है परन्तु चालक को मिलने वाले रोमांच, पुलक तथा उत्तेजना में भी कोई डिसटिन्क्शन (भेद, विशिष्टता) तथा डिसपेरिटी (असमानता, विभिन्नता) महसूस करते हैं ?**

- चॉपर (हेलीकॉप्टर) और प्लेन (एयरक्राफ्ट), दोनों को उड़ाने के बेसिक्स वैसे तो एक समान हैं। चॉपर कम ऊँचाई पर उड़ाया जाता है इसलिए उस पर वी एफ आर (विजिबल फ्लाईट रूल्स) लागू होते हैं, क्योंकि दृश्य नज़र में रहता है। लगभग 70% परिदृश्य साफ़ रहता है।

प्लेन बहुत अधिक ऊँचाई पर उड़ाया जाता है इसलिए उस पर आई एफ आर (इंस्ट्रूमेंट फ्लाईट रूल्स) लागू होते हैं, क्योंकि

बमुश्किल 10 % परिदृश्य नज़र में आता जाता रहता है, बाकी 90 % तो खुला संकेत विहीन आकाश ही पॉयलट के सामने होता है।

- **आपके हुनर में स्पीड (रफ़्तार) की बहुत बड़ी भूमिका है। स्पीड पर आपका अपना कंट्रोल होता है, कैसा लगता है ?**

– नो डाउट, स्पीड हेज क्रूसिअल रोल इन फ्लाईंग। रफ़्तार को कम ज्यादह भी पॉयलट ही करता है पर एक तयशुदा लिमिट तक ही। यह लिमिट ए. टी. सी. (एयर ट्रेफिक कंट्रोलर) के निर्देश पर बदलते रहती है।

पॉयलट की परफॉर्मेंस ना तो कठपुतली जैसी होती है ना मनमौजी जैसी।

आसमान में सीमित या असीमित दोनों रफ्तारों का मतलब एक बिंदु पर सिर्फ सुरक्षा ही होता है। ब्लेक बॉक्स के निष्कर्ष बतलाते हैं कि हवाई दुर्घटनाओं में हमेशा इरॅर एक सिक्वेंस में पाई गयी हैं। जैसे परीक्षा में एक प्रश्न-पत्र में प्रश्न गलत छप जाए तो सटीक उत्तर की संभावनायें आंकना दुष्कर हो जाता है ।

ऑटो पॉयलट मोड पर 99 % सेफ्टी सुनिश्चित होती है पर विमान के कॉकपिट में इंसानी पॉयलट को 100 % सेफ्टी असंदिग्ध रूप से आश्वस्त करनी होती है।

एक नियमित पॉयलट विमान के पहियों का स्पर्श जमीन से छूटते ही यान को शतप्रतिशत सुरक्षित पाता है।

- **जिन्दगी में भी कुछ धीरे तो कुछ तेज कर देने का मन होता है? यू मे डाउट, कि यह फैंटेसी है, पर ऐसा कुछ लगता है, क्या ?**

– (छोटी सी हँसी) बहकने जैसा कभी कुछ हुआ नहीं। हाँ, ऐसा जरूर लगता है कि कोई भी काम फटाफट हो जाना चाहिए। 'टाईम मैनेजमेंट' की एक पक्की आदत हो गयी है।

'यदि आप जहाज की गति से अपनी सोच की गति में पीछे हैं तो जहाज आप से आगे निकल जाएगा जो आपकी अयोग्यता है।'

- **इंस्ट्रूमेंटल म्यूजिक एक ऐसा आर्ट है जिसमें परफॉर्मर अपने प्ले बोर्ड पर स्पीड के साथ खेलता है और एन्जॉय करता है, क्या वैसे ही स्टार बोर्ड (दाहिने) तथा पोर्ट (बांये) पर पॉयलट बटनों के साथ खेलकर एन्जॉय करता है ?**

– सिंक्रोनाईजेशन पॉजिटिव होना चाहिए। इस जॉब में एक परमानेंट मैनुअल यानि रूल्स तय होते हैं। (मुस्कुराकर) दीवानेपन के लिए कोई जगह नहीं होती। एक उदाहरण देता हूँ, यान दुर्घटना में 'हेड ऑन कोलिजन' (आमने सामने की टक्कर) को सबसे भीषण हादसा माना जाता है, ऐसी स्थिति का अंदाजा हो तो दोनों विमान के पॉयलट्स अपने अपने विमान को स्टार बोर्ड की डायरेक्शन यानि दाहिनी दिशा में ही मोड़ेंगे। यह सर्वमान्य इंटरनॅशनल गाईड लाइन है।

- **यूं कहें कि फ्लाईंग और म्यूजिक में तमाशेबाज़ (स्पेक्टल/शोमैन) और तमाशाई (स्पेक्टेटर/शो व्यूअर) एक ही बंदा होता है। क्या मैं सही हूँ, साहब ?**

– बिलकुल सही हैं, आप। लेकिन पीछे बैठने वाले ज्यादह एन्जॉय कर रहे होते हैं। (हँसी)

- **हम आम लोगों की नज़र में रिस्क आपके पेशे को असामान्य ढंग से खासमख़ास मतलब निराला (यूनिक) बनाती है। निर्विवाद तौर पर, इस काम में रिस्क एक सच्चाई है। इस सच्चाई से जो आप डील करते हैं, उस बारे में बतलाईयेगा ?**

– सेफ्टी खुद रिस्क को न्युट्रलाईज करती है। एहतियात के क्लाईमेक्स जैसा लग सकता है आपको परन्तु एक निश्चित और छोटे अंतराल पर पॉयलट का मेडिकल परीक्षण होता है तब उसे फिटनेस सर्टिफिकेट लेना होता है। अपने लायसेंस का हर साल रिनिवल करवाना होता है।

यान को तो प्रत्येक फ्लाईट के पहले गहन परीक्षण से गुजरना होता है।

यह सब रिस्क डीलिंग का ही पार्ट है।

इन नट शेल 'पहली गलती, आख़िरी गलती होती है।'

- **एक आम नजरिया है कि कला(आर्ट) एक रचनात्मक खूबी(क्रियेटिव मेरिट) है जो भीतर की गहराई से किसी**

रचना के रूप में प्रकट होती है जबकि शिल्प या कारीगरी या हस्त कौशल(क्राफ्ट) एक दक्षतापूर्ण निर्माण कार्य है जिसमें किसी युक्ति (टेक्नीक) का इस्तेमाल होता है। यह युक्ति पर्याप्त अभ्यास से सीखी जाती है। अब वाहन के संचालन को आप कहाँ देखते हैं आर्ट में या क्राफ्ट में ?

– आर्ट में ।'मोर फ्लाय मोर पॉलिश'। मैं मानता हूँ जो अभ्यास से निखारी जा सके वह कला है।

- **विवाह के पहले तथा विवाह के बाद यान उड़ाने के अनुभवों में कोई फर्क नोटिस किया हो आपने ?**

– माँ पिताजी की जिम्मेदारी पहले से है अब श्रीमती और बच्चों का जुड़ाव 'लैंड' करते ही घर की तरफ खींचता है।

- **मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि आपकी जीवन संगिनी आपको 'अतिमानव' यानी 'सुपरमेन' मानकर लव एंड रिगार्ड शेयर करती और करवाती होगी ?**

– मन के खिलाफ होना हर किसी को डिस्ट्रेक्ट (व्यग्र, उचाट,) करता है। ये मन:स्थिति उड़ान के लिए अनुकूल नहीं समझी जाती। (हँसकर).... संगिनी सांगोपांग (थारोली) ख्याल रखती है।

(मैं बीच में टोकता हूँ) '' अरे ! यह तो उल्टा हो गया। लोहे के बजाय कांच के हो गए आप !! हेंडल विद केयर वाला मामला। उलटे उन्हें आपकी चिंता करनी पड़ रही है।'')

किसी की खुशी में खलल डालना घोर पाप होता है।

- **कहते हैं कि भय(फियर) तथा विस्मय (एस्टोनिशमेंट) इंसान के आदिम (प्रिमिटिव) भाव है। मैं अभी भी व्हीकल चलाता हूँ तो भी इतने अभ्यास के बाद इन भावों से बरी नहीं हूँ। आपको कैसा लगता है ?**

– डर वाली कोई बात नहीं है। एस्टोनिशमेन्ट का मजा लेना क्या कला का ग्राउंड वर्क नहीं है ?

(मैंने मन में उनके इस सवाल पर जबरदस्त दाद दी)

....मेरे छोटे भाई साहब आदर्श भी पॉयलट हैं, बचपन से यूनिफ़ॉर्म जॉब के क्रेज़ी रहे। डर की बात होती तो मेरे रहते वे क्यों इस प्रोफेशन में आ पाते ?

.....आमतौर पर दूसरों की गफलत से भी जमीनी एक्सीडेंट बहुत होते हैं, हवाई दुर्घटनाओं में यह परसेंटेज नहीं सा है।
मुझे तो भीड़भाड़ में ड्राईव करने में मज़ा आता है।

- ***विश्वास जी, यह साक्षात्कार कई मायनों में डिफरेंट है। आर्ट में मशीन ऑपरेशन खुद अपनी एक जगह बना रहा है। बच्चों से बड़ों तक का कम्प्यूटर गेम्स खेलना हो या छोटे से मोबाईल में अपनी मौज मस्ती को पा लेना हो, ब्लू व्हेल जैसे गेम में जान का भी आख़िरी दांव लग रहा है तो* स्पीड, थ्रिल *और* जॉय *क्या आर्ट के फ्यूचर एक्सपेक्टेशंस नहीं होंगे ?***

– आर्टिस्ट होने का मतलब होता है, अन्दर के हुनर को पहचानकर अपनी मिहनत और रियाज़ से निखारना उसमें सुघड़ और सिद्धहस्त होना।

लाईफ के हर ज़ोन में मशीन है। आर्ट में भी। तो क्यों ना पेशेवर आर्टिस्ट बना जाए ?

आपने कई महत्वपूर्ण मौकों पर हवाई जहाज की कलाबाजियां (एयरोबेटिक्स) आसमान में देखी होगी, यह एक्रोबेटिक्स या सॉमरसाल्ट (नट की कलाबाजी) से कोई कम लगा क्या आपको ?

कई बार आकाश में एयरक्राफ्ट में फ्यूल (ईंधन) की कमी हो जाती है, उस वक्त दूसरा एयरक्राफ्ट आकर पहले को ईंधन देता है, यह एक आर्टिस्टिक सीन होता है, विमान दो होते हैं पर तीसरी चीज होती है– फॉर्मेशन फ्लाईंग जिसमें दोनों विमानों को अपनी अपनी दिशा और गति बिलकुल समान रखनी पड़ती है।
यह एकदम एक डांसर और पेंटर जैसी परफॉर्मेंस है।

पिछले दस सालों में एवियेशन (विमानन) में आकर्षक ग्रोथ हुई है। गर्ल्स के लिए भी भरपूर मौके। चुनौतीपूर्ण प्रोफेशन। दमदार वेतन। नए शहर नए देश।
कम्प्लीट जॉब सेटिस्फेक्शन। आज मुझे विमान उड़ाना सिखाने का 1000 घंटों का अनुभव है। ये आंकड़े जैसे जैसे बढ़ते हैं उसी

अनुपात में खुद पर विश्वास भी। हमारे होने का अर्थ निकलता है।

● **विश्वास, मन में पॉयलट के रूप में आपकी एक बड़ी गंभीर सी छवि की इमेजिनेशन थी पर आपके चेहरे पर सजी बच्चों सी निर्दोष हँसी आपको एक लाड़ले इंसान की तरह....मतलब सब आपको प्यार ही करेंगें, ये आभा ये रूहानी ताकत कहाँ से आती है ?**

– मेरे माता–पिता ही शक्ति है और परिवार मेरा विश्वास। फ्लाईंग इज इन माय ब्लड।

(कुछ अदृश्य को जेहन में दृश्य बनाते हुए) देखिये मेरे लाईफ में एक बहुत ग्रेट इंसान है..कैप्टन अनंत सेठी मेरे लिए सब कुछ फ्रेंड, फिलोसफ़र एंड गाईड, मेरे मेन्टॉर। डायरेक्टर ऑफ एवियेशन, देश में बहुतेक प्रादेशिक सरकारों के परामर्शक। मैं आज जैसा हूँ, उनका ही बनाया हुआ हूँ।

(एक खुली हँसी के बाद) मेरे आराध्य, ईष्ट हनुमान जी हैं ..... मैं टी–टोटलर हूँ, न कोई 'नशा' न कोई 'शान', एकदम सिंपल।

कला के इस नए इन्वेस्टीगेशन में खुले मन से की गयी आपकी इस मदद के लिए कला समय की ओर से मैं अत्यंत आभारी हूँ।

– यह 'इन्वेस्टीगेशन' मुझे बहुत अच्छा लगा, इसमें मुझे एक एविडेंस (सबूत) के तौर पर आपके द्वारा रखा जाना इनफेक्ट मैंने खूब एन्जॉय किया।

(फिर विश्वास ने मुझे रोका और दृश्य बदल गया। हॉट सीट पर मुझे कर दिया और सवाल दाग दिया।)

● ***''मैं भी आपसे एक सवाल करना चाहता हूँ कि मैं मानता हूँ कि एयरक्राफ्ट उड़ाना एक कला है, इसकी मैंने स्वीकृति भी दी, ऐसा और लोग भी भिन्न मुद्दों पर कर सकते हैं, क्या सिर्फ इतना करने से कॉन्सेप्ट स्थापित हो जाते हैं ?''***

– उनको जवाब में रखे गए सिलसिले का पॉकेट संस्करण इस तरह है :–

भारतीय मनीषा के अनुसार कला उन सारे क्रिया–कलापों को कहते हैं जिनमें कौशल अपेक्षित हो।
कौशल : यह सिद्धहस्तता या प्रावीण्य है।
सिद्धहस्तता(प्रावीण्य) : रुचिपूर्ण अभ्यास।
रुचिपूर्ण अभ्यास : इसमें सदा विधि विकसित करने की संभावना रहती है। यह अक्सर मान्य विधि से शुरू होता है, जिज्ञासा इसमें मूल्य संवर्द्धन करती है। जिज्ञासा और खोज दृष्टि दोनों मिलकर नवीन विधि का अनुसंधान भी इस अभ्यास प्रक्रिया में कर लेती है।
विधि : विधि को स्मृति या स्मृति उपकरणों (पुस्तकीय, धात्विक, तरंगीय) में दर्ज करते समय उसके दो हिस्से हो जाते हैं। उसकी ज्ञान संबंधी याद रखने वाले बिंदु अलग और प्रयोग संबंधी याद रखने वाले बिंदु अलग।
ज्ञान संबंधी याद रखने वाले बिंदु : इन्हें जहां समेकित किया जाना चाहिए, वह 'शास्त्र' कहलाया।
प्रयोग संबंधी याद रखने वाले बिंदु : इन्हें जहां समेकित किया जाना चाहिए, वह 'कला' कहलाया।

(लौटते वक्त मेरी नज़र एक फोटोफ्रेम पर ठिठक गयी। पिताजी का फोटो वर्दी में। उनके कन्धों पर सजे स्टार्स में से कुछ छिप गए थे, विश्वास और आदर्श की छवियों के पीछे। बाजू में खड़े पिताजी से रूखसत होते, नमस्कार करते, फोटो की ओर ईशारा करते हुए बरबस मैं उनसे कह उठा 'भाई साहब, आपके रीयल स्टार्स तो आपके दोनों बेटे हैं।'

एक हँसी। उस हँसी ने बतलाया कि एक पिता अपने बेटों के काम से कितना गौरवशाली अनुभव करते हैं। बड़ी मधुर हँसी। उस माधुर्य को लिखने में मैं असमर्थ हूँ।)

■

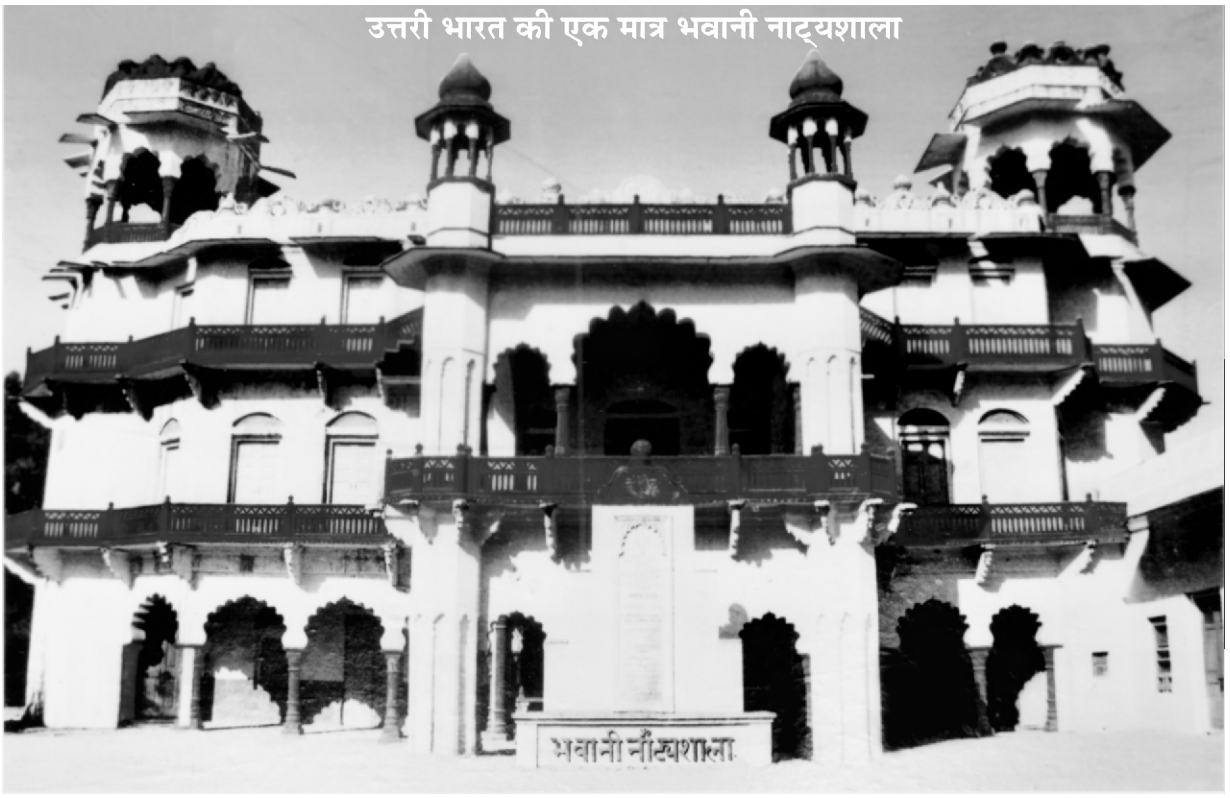

विश्व रंगमंच की विस्मयकारी धरोहर

''झालावाड़ की भवानी नाट्यशाला''

- ललित शर्मा

पारसी ओपेरा शैली में वास्तुकला की भव्यता लिये तथा अनेक देशी-विदेशी नाटकों की प्रस्तुति के लिये प्रसिद्ध झालावाड़ जिला मुख्यालय (राजस्थान प्रदेश)में बनी ''भवानी नाट्यशाला'' समस्त उत्तरी भारत में अपने ढंग का एकमात्र प्रेक्षागृह है। विश्व रंगमंच की इस विस्मयकारी धरोहर में जहाँ एक ओर पारम्परिक नाटकों की सुन्दर प्रस्तुति रही, वहीं पश्चिमी नाट्कों की बयार भी यहाँ जीवन्त रूप में प्रस्तुत हुई।

इस नाट्यशाला के कल्पनाकार थे झालावाड़ राज्य के तत्कालीन होम एवं मिलिट्री मेम्बर ठाकुर उमराव सिंह जिन्होंने यूरोप की यात्रा के दौरान अपने अर्जित ज्ञान से कोयले द्वारा पाषाण पट्टिका पर इस नाट्यशाला का नक्शा बनाया तथा इसी से प्रभावित होकर इस नाट्यशाला को 1921 ई. में सुन्दर मूर्त रूप दिया यहाँ के कलाप्रिय तत्कालीन नरेश महाराज राणा भवानीसिंह ने।

वैसे इस नाट्यशाला से पूर्व 1904 ई. से ही यहाँ (झालावाड़ में) ''राजपूताना- मालवी नाट्य मण्डली'' का निर्माण हो चुका था और दिल्ली में आयोज्य अंग्रेज सरकार द्वारा ''दिल्ली

- **कवि कालीदास के नाटक से हुआ था इस धरोहर का शुभारम्भ**
- **पाषाण पर कोयले से बना था इसका मानचित्र**
- **उत्तरी भारत की एकमात्र 'पारसी ओपेरा' शैली की सुन्दर धरोहर**

दरबार'' के समय नाटक के एक सफल और ख्यातनाम निर्देशक ''मिर्जा नजीर बेग नजीर'' को महाराजा भवानीसिंह झालावाड़ ले आये तभी से यहाँ नाटकों का प्रचलन रहा। परन्तु नाटक गतिविधियों का तेजी से दौर यहाँ तब आरम्भ हुआ जब महाराजा भवानीसिंह ने ''भवानी नाट्यशाला'' का निर्माण करवाया। यह निर्माण 1920 ई. में आरम्भ हुआ और फिर इस सुन्दर ओपेरा शैली की नाट्यशाला के उद्घाटन अवसर पर 16 जुलाई 1921 ई.को जो पहला नाटक खेला गया वह था महाकवि कालिदास द्वारा विरचित ''अभिज्ञान शाकुंतलम्'' जो मूल संस्कृत नाटक का हिन्दी अनुवाद था। ज्ञातव्य कि मिर्जा नजीर बेग नजीर के निर्देशन और स्वयं महाराजा भवानीसिंह की अध्यक्षता एवं देश के कई रजवाड़ों के राजाओं की उपस्थिति में खेला गया यह नाटक इस आशय से भी आश्चर्य चकित कर देने वाला था कि इसके सभी कलाकार पुरुष थे।

भवानी नाट्यशाला के मुख्य द्वारा पर एक संगमरमर की पट्टिका पर निम्नलिखित पक्तियाँ तीन भाषा हिन्दी, अंग्रेजी व उर्दू में इसके आयोजक एवं प्रथम प्रस्तुत नाटक के बारे में इस प्रकार स्थापित है-

ॐ

यह भवानी नाट्यशाला

(श्री हूजूर हिजहाईनेस महाराजाधिराज महाराज राणा श्री 108 श्री भवानीसिंह जी)

प्रजा सर्वस्व नरेश ने सर्व प्रकार के उत्तमोत्तम अभिनय एवं व्याख्यानों हेतु अपनी जेब खर्च के द्रव्य से ठाकुर उमराव सिंह होम मिनिस्टर मेम्बर स्टेट कोंसिल के प्रबन्ध द्वारा निर्मित की ओर इसमें प्रथम बार तारीख 16 जुलाई सन् 1921 ई. मिति आषाड़ शुक्ल 12 शनिवार संवत् 1978 विक्रमी को महाकवि कालिदास रचित 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' नाटक श्री हूजूर हिजहाईनेस के समक्ष मंच पर खेला गया।

''भवानी नाट्यशाला''

इस प्रस्तुत नाटक में तब निम्न कलाकारों ने सौंपी गई भूमिकाएं अभिनीत की थी। यथा शकुंतला -नन्हेखाँ, ऋषि कण्व -छोटेखाँ, मेनका -पन्नालाल, दासी -श्यामलाल पासवान, राजा दुष्यन्त -मिर्जा नजीर बेग । इस नाटक के अन्य सहायक कलाकार थे -मास्टर पुरूषोत्तम मेहता, अब्दुल रहमान काबुली, मोतीलाल, नंदकिशोर, मांगीलाल, कादर भाई एवं ऊमर भाई।

इस नाटक के बाद दो दशकों तक यहाँ नाटकों का यह क्रम इन्हीं जैसे नायाब कलाकारों और आवाज -बहादुरों के आते चलता रहा। नाटक और नाट्यशाला आबाद रहने लगे। अभिज्ञान शाकुन्तलम्

भवानी नाट्यशाला के निर्माता महाराज राणा भवानी सिंह

नाटक में राजा दुष्यन्त के लिये लाये असली घोड़ों के सुन्दर रथ का वर्णन तो आज भी कई बुजुर्ग करते है। इस नाटक के बाद यहाँ प्रति शनिवार को नाटक का मंचन होता रहा। तीन-चार दिनों की रिहर्सल के बाद ही उसकी प्रस्तुति यहाँ होती थी। वह जमाना ही कुछ ऐसा था कि उस समय छावनी (मुख्यालय झालावाड़) के कोतवाल का वेतन 4 रूपये था तो इस नाट्यशाला के इंचार्ज का 96 रूपये। नाट्यशाला के विकास क्रम में कलाप्रिय महाराजा भवानीसिंह और उनके बाद महाराजा राजेन्द्र सिंह 'सुधाकर' ने नाट्य परम्परा को दिशा और गति प्रदान की। बाद में नजीर सा. के सानिध्य में यहाँ के कई कलावन्त जुड़ते गये जिनमें नवल जी राव, धनजी राव,गफूर भाण्ड, नन्हेखाँ , छन्नूखाँ, रामनाथ पाठक , मथुरालाल शर्मा, मन्नालाल, रामनारायण लहरी व चन्दालाल शर्मा आदि का नाम उल्लेखनीय है।

इस नाट्यशाला में इसके बाद उक्त कलाकारों द्वारा जो अन्य नाटक मंचित किये गये उनके नाम क्रमशः इस प्रकार है- 'राणा प्रताप, शहीदे नवाज,' 'खूबसूरत बला', सफेद खून', 'सुदामा चरित्र', कत्ले नजीर 'खुदा दोस्ते','भूल भुलैया', 'सद्दाद', 'इन्द्रसभा', 'शहीदुर्रेनुरेवतन', 'महाभारत', 'वीर अभिमन्यु', 'सुल्ताना डाकू', 'श्रीमती मंजरी', 'गोरखधन्धा','राजा हरिश्चंद्र' आदि। नाटकों के इसी क्रम में झालावाड़ के पुरूषोत्तम मेहता उन शौर्यवान नाट्य कलाकारों में से थे, जिन्होंने 'राणा प्रताप' के वीरोचित चरित्राभिनय में इसी नाट्यशाला में भारी भरकम जिरह बख्तर और भाले के रूप में तीन मण फौलादी लोहे का भार अपने शरीर पर ढोया था, जिसके फलस्वरूप वे महिनों तक उन्मादग्रस्त रहे।

भवानी नाट्यशाला
के कल्पनाकार थे झालावाड़
राज्य के तत्कालीन होम एवं मिलिट्री मेम्बर
ठाकुर उमराव सिंह जिन्होंने यूरोप की यात्रा के दौरान
अपने अर्जित ज्ञान से कोयले द्वारा पाषाण पट्टिका पर इस
नाट्यशाला का नक्शा बनाया तथा इसी से प्रभावित
होकर इस नाट्यशाला को 1921 ई. में सुन्दर मूर्त
रूप दिया यहाँ के कलाप्रिय तत्कालीन नरेश
महाराज राणा भवानीसिंह ने।

बाद में यहाँ पं. बालगोविन्द की सदारत में बने मित्र -मण्डल के नाट्य दल ने 1946 ई. तक इस नाट्यशाला में देशभक्ति से ओतप्रोत अनेक नाटक मंचित किये। इस मण्डल ने यहाँ अपना पहला नाटक 'कृष्ण जन्म' जन्माष्टमी के अवसर पर मंचित किया था इस प्रदर्शन के बाद निरन्तर बारह वर्षों तक यह प्रथा चल पड़ी कि भवानी नाट्यशाला में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर नाटक का मंचन हो। इस दौरान इस नाट्यशाला में कई ऐसे नाटक मंचित किये गये जिनमें पशुधन को असली पात्र के रूप में मंच

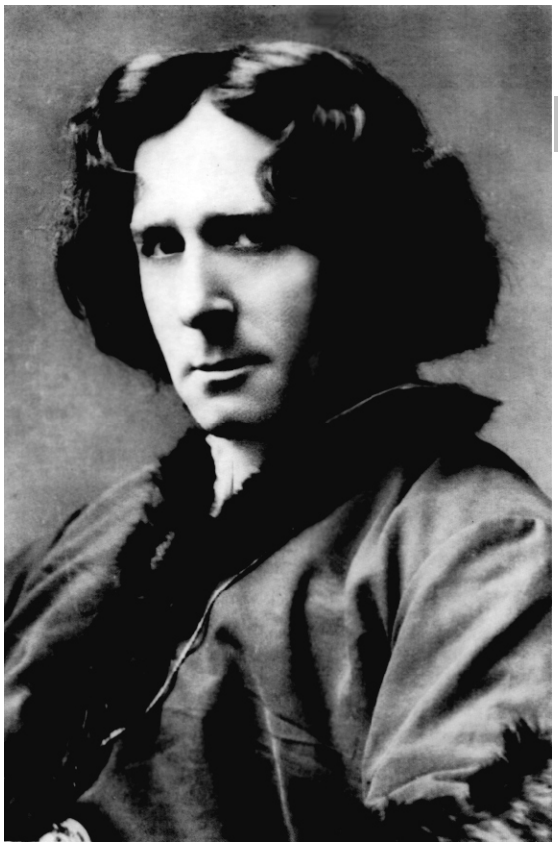

भवानी नाट्यशाला के प्रसिद्ध रंगकर्मी चार्ल्स डोरेन

पर उतारा गया। इसमें 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' नाटक के मुख्य पात्र राजा दुष्यन्त के लिये लाये गये असली घोड़ो के रथ और महाराण प्रताप के असली प्रशिक्षित 'चेतक' की 'एंट्री-एक्जिट' के लिये विपुल स्थान को आज भी देखकर उदाहरण बनाया जा सकता है। स्थानीय कलाकारों के अलावा बाद में यहाँ कलकत्ता की 'अलफ्रेड नाट्य कम्पनी' ने भी कई नाटक प्रस्तुत किये। इसी क्रम में इंग्लैण्ड के कई नाट्य कलाकारों को यहाँ आमंत्रित किया गया जिनमें से एक कलाकार 'चार्ल्स डोरेन' तो इसी नाट्यशाला का होकर रह गया था। उसने इस नाट्यशाला में दिशा-निर्देश के साथ-साथ कई रंगकर्मी भी तैयार किये। फलत: 'राजा हरिश्चन्द्र', 'मोरध्वज', 'आमल दे खीवरा' व 'गोपीचन्द भृतहरि' आदि नाटक उसी के निर्देशन में खेले गये। इस दौरान न केवल पारसी शैली में अभिनीत वरन् शैक्सपियर द्वारा रचित प्रसिद्ध ट्रेजेडी 'हेमलेट' नाटक का भी सफल मंचन अंग्रेजी भाषा में इसी नाट्यशाला में हुआ था। हेमलेट के मंचन में सर्वाधिक महत्व की उल्लेखनीय बात यह है कि झालावाड़ राज्य के तत्कालीन राजकुमार (राजराणा) राजेन्द्र सिंह 'सुधाकर' ने इस प्रसिद्ध नाटक में खलनायक की भूमिका सफलतापूर्वक निभाई थी। वहीं विश्वविश्रुत नृत्यकार पं. उदयशंकर ने अपनी नृत्यकला का प्रथम प्रदर्शन भी अल्पायु में इसी नाट्यशाला में किया था।

इस नाट्यशाला में नाटक देखने वालों के लिये भी स्थान बने हुए थे। मंच के सामने राज परिवार के अलावा मेहमान राज परिवार और उसके साथ आये अन्य विशिष्ट लोग तथा राज्य के जागीरदारों के परिवारों व गणमान्य नागरिक तथा सेठ साहूकार स्थान पाते थे। अन्य को बालकनियों में बाहर के मेहमान राज परिवारों के साथ आये जागीरदार परिवारों तथा विशिष्ट लोगों के बैठने की व्यवस्था थी। विशेष तौर पर अलवर, टोंक, किशनगढ़, बूढ़ा बकवान, पटियाला और घांग्रदरा (गुजरात) राज परिवार अपने लवाजमों के साथ इस नाट्यशाला में मंचित नाटकों में शामिल होते थे। इस नाट्यशाला में आम अवाम के लिये गैलेरी का स्थान निश्चित था। नाटकों के दौरान व्यवस्था भी इतनी चुस्त और सतर्क थी कि द्वारपाल उस दर्शक को भीतर प्रवेश नही करने देते थे, जिन्हें तेज खांसी हो व जिनके जूतों में लोहे की नाल ठुकी हो। यहाँ तक की अबोध शिशुओं को लेकर भी नाटक देखने नहीं आने दिया जाता था, क्योंकि वह शिशु जाने कब रो पड़े और नाटक में व्यवधान उत्पन्न हो जायें। पूर्ण शांति नाट्य प्रदर्शन के लिये आवश्यक रहती थी। इस तथ्य से पाठक अनुमान लगा सकते है कि इस नाट्यशाला के नाटकों में कलाकारों और कायक्रमों की प्रस्तुति ही नही वरन् दर्शकों श्रोताओं तक के स्तर पर कितना ध्यान दिया जाता था। नाटकों की अभिनय शैली मूलत: पारसी थियेट्रिकल किस्म की होती थी, जिसमें संवाद जोर से

भवानी नाट्यशाला में सितारवादन प्रस्तुत करते प्रसिद्ध संगीतकार पं. रविशंकर(1992 ई.)

बोले जाते थे। जिससे श्रोता ठीक से सुन सके। ठीक इसी शैली पर निर्मित हुई यह नाट्यशाला इस मायने में भी लासानी थी कि इसके निर्माण में ध्वनि के प्रत्यावर्तन की विशेषता रही, जिसके कारण इसी तीन मंजिली दर्शक दीर्घा में हर छोर पर आवाज साफ सुनाई देती है। उस समय ध्वनि प्रसार यंत्रों (माईक्रोफोन) का प्रचलन नही था।

1950 ई. में 'देश की आवाज' यहाँ खेला गया अन्तिम नाटक था, उस नाट्य परम्परा का कि जिस भवानी नाट्यशाला की पारसी ओपेरा शैली विश्व थियेटर के इतिहास में एक स्मरणीय घटना रही। इस नाट्यशाला के निर्माण की पूर्ण लागत उस युग में एक लाख पचास रूपये रही, जो यहाँ के कलाप्रिय नरेश भवानीसिंह ने अपने निजी जेब खर्च से दी थी। यह तथ्य उनके शासकीय व्यक्तित्व में साहित्यिक व कलात्मक अनुराग के प्रमाण का प्रतीक हैं। जो उस युग के भारतीय रजवाड़ों के अनेक शासकों से भिन्न पाई जाने वाली दुर्लभ प्रवृति का परिचायक है।

1950 ई. के बाद यह नाट्यशाला नाट्य प्रस्तुति में अवरूद्ध सी हो गई थी, परन्तु बाद में स्थानीय युवा कला प्रेमियों की कोशिशों से राजस्थान संगीत नाटक अकादमी की ओर से यहाँ से यहाँ अनेक सफल नाटक प्रस्तुत किये गये। आज भी यह नाट्यशाला नाटकों के मंचन के लिये मुखर भाव से खड़ी हुई अपनी स्वर्णिम आभा बिखेरती देखी, परखी जा सकती है।

''अद्भुत निर्मिती''

इस बेमिसाल नाट्यशाला और इसके मंच का निर्माण उस युग में इस ढंग से किया गया था कि बड़े-बड़े देशी-विदेशी वास्तुविद् आज भी इसके निर्माण की परिकल्पना करने वाले दिमाग पर आश्चर्य व्यक्त करते हैं। इसमें तिमंजिला प्रेक्षागृह तथा मंच की दिशा को छोड़कर तीनों ओर सुन्दर बालकनियाँ बनी है। इन मेहराबदार कलात्मक बालकनियों की संख्या 36 है। नाट्यशाला में ठण्डी और शुद्ध वायु के प्रवेशार्थ निचली मंजिल में कई द्वार है, जबकि दूषित वायु के निकास हेतु ऊपरी मंजिल पर खिड़कियां एवं रोशनदान इतने वैज्ञानिक आधार पर बने हुए है कि सभागार खचाखच भरा होने पर जरा भी घुटन महसूस नहीं होती है। नाटकों में तकनीकी शब्दावली से परिचित लोगों, कलाकारों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस नाट्यशाला में 'एप्रेन' से प्रवेशद्वार की दूरी 'बेक स्क्रीन' की दीवार की दूरी के समान है। मंच के पीछे लगभग

100 वर्गफीट का प्लेशील्ड है। बेक स्क्रीन वाली दीवार से बायीं तथा दाहिनी ओर ऊपर से नीचे की ओर उतरने, चढ़ने वाली सुन्दर सीढ़ियाँ बनी है, जिनकी परिकल्पना वियेना का आधार था। वहाँ जिस प्रकार मुजाई की धुनों पर हाथी घोड़े और नर्तकियां थिरकती थी, ठीक उसी तर्ज पर इस नाट्यशाला के मंच की बेक स्क्रीन की सीढ़ियाँ का निर्माण करवाया गया था, जिन पर परियाँ जब 'इन्द्रसभा' नाटक में देवराज इन्द्र के शाही दरबार में उतरती थी। तब दर्शकों को ऐसा प्रतीत होता था, मानो गगन परियाँ आकाश में पंख फैलायें हौले-हौले उतर रही हो।

उल्लेखनीय है कि 33 फुट लम्बे, 28 फुट चौड़े एवं 23 फुट ऊंचे मंच के ठीक सामने 87 कलात्मक पाषाण स्तम्भों पर बनी 61 फुट लम्बी व 48 फुट चौड़ी 36 बालकनियों वाली यह नाट्यशाला आज भी देशभर में अनूठापन लिये हुए है। इस नाट्यशाला के मंच (जहां नाटकों का मंचन हुआ करता था) पर सरकने वाले 15 ऊंचे अतिभव्य पर्दों की ऐसी बेमिसाल व्यवस्था थी, जिनकी कीमत उस युग में दस-दस हजार रूपये थी। दोनों ओर से खुले और नीचे से खोखले काष्ठ निर्मित मंच (स्टेज) को नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे लाने, ले जाने की भी व्यवस्था थी, जहाँ हाथी, घोड़ों के लक्षकारों की सवारी और रथो के काफिले की आसानी से प्रवेश की व्यवस्था जिन प्रवेश द्वारों से थी वे आज भी है। मंच के नीचे संगीत देने वाले साजिन्दों के मय संगीत उपकरणों सहित बैठने व धुन प्रवाहित करने के लिये तलघर कक्षों की सुन्दर व्यवस्था थी, ठीक वैसी ही जैसी विदेशी ओपेरा हाऊस में होती है।

इन सभी के अतिरिक्त विशाल रथों को सीधे मंच पर उतारने तथा ध्वनि प्रकाश के माध्यम से कलाकारों को अधर में तैरता दिखाने और नाटक के अनुरूप पात्रों को प्रकट अथवा गायब कर देने के उपकरणों की ऐसी व्यवस्था थी, जिन्हे देख कर दर्शक अतीत के अनोखे संसार में खो जाते थे। इन सभी के साथ नाट्यशाला की निर्मिती में ध्वनि प्रत्यावर्तन का ऐसा समागम था कि आवाज बहादुर कलाकारों के संवाद पूरी नाट्यशाला में बैठे हर दर्शक को साफ सुनाई देते थे। यह प्रयोग आज भी देखा जा सकता है।

इस प्रकार देश को आजादी मिलने तक इस नाट्यशाला ने अपने निर्माण व उद्देश्य का ससम्मान यश भोगा और फिर लम्बे समय तक यह मौन खड़ी रही। बाद में पुनः कलाकारों में जागृति आई और यहाँ अनेक सफल नाटकों की प्रस्तुति हुई। अब निकट भविष्य में इसके सुधि दिन आने की प्रबल सम्भावना बनी है। सारतः आज भी यह धरोहर अपने अतीत की सुन्दर गवाही देती देखी जा सकती है। नाट्य लेखकों, समीक्षकों, साहित्यकारों और नाट्य कलाकारों के लिये तो यह नाट्यशाला आज भी प्रेरणास्पद है।

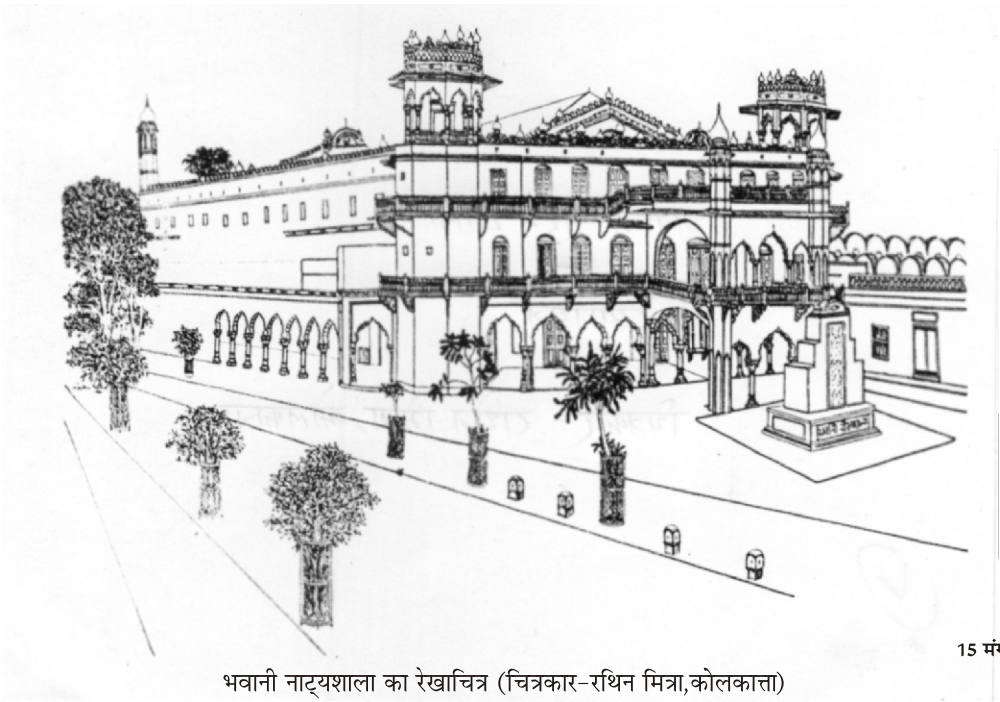

भवानी नाट्यशाला का रेखाचित्र (चित्रकार-रथिन मित्रा,कोलकात्ता)

'अनहद', जैकी स्टूडियो,
15 मंगलपुरा, झालावाड़-326001(राज.)
मो.-98298 96368

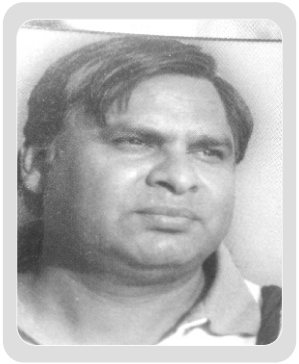

यश मालवीय के दो गीत

यश मालवीय
जन्म : 18 जुलाई 1962
जन्म स्थान: कानपुर, उत्तरप्रदेश
प्रमुख कृतियाँ : कहो सदाशिव, उड़ान से पहले, बुद्ध मुस्कुराये

संपर्क- ए-111, मेहंदौरी कॉलोनी इलाहाबाद- (उ.प्र.)211004
मो.- 98397 92402

1. फिर सिन्दूरी शाम

कौन लिख रहा है बादल पर
आज हमारा नाम
आसमान के छोर सजी है
फिर सिन्दूरी शाम

रंग और रेखाओं वाला
सपना गाता है
पास बैठकर जैसे कोई
अपना गाता है
नीले फूलों पर हँसता है
पीला पीला घाम

दूर कहीं पर कोई
भूरी चिड़िया सजती है
जलतरंग पर एक पुरानी
धुन सी बजती है
रह जाते हैं बहुत ज़रूरी
कल परसों के काम

नदी उतरती है पर्वत से
घाटी खिलती है
भूले हुए रास्तों से भी
जाकर मिलती है
लहर-लहर पर धीरे-धीरे
बहता है आराम

2. सुस्ताती हैं स्कूल बसें

दिखे न अल्हड़ सुबह,
न दिखतीं भीगी हुई मसें
छुट्टी के दिन हैं
सुस्ताती हैं स्कूल बसें

जिनमें किलकारी रहती हैं
आज वही कितनी उदास हैं
इनके ऊपर झर-झर झरते
गुलमोहर या अमलतास हैं

ये हँसतीं ही नहीं
कि जब तक बच्चे नहीं हँसें

पहियों से छत तक
पत्ते ही पत्ते बिछे नज़र आते हैं
बिना टिफिन की खुशबू
इनके चेहरे उतर-उतर जाते हैं

अम्मा बच्चों के जूतों के
फीते नहीं कसें

बस की खाली-खाली खिड़की
सूने पड़े दृश्य देती है
बस्तों में ड्रॉइंग की कॉपी
अपने चित्र छुपा लेती है

जीवन क्या जीवन
धारा में जब तक नहीं धँसें

डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति की तीन ग़ज़लें

डॉ. कृष्ण कुमार प्रजापति
जन्म : राउरकेला(ओड़िशा)
प्रकाशित कृतियाँ : हरी बाँसुरी के स्वर(कविता संकलन), देश में निकला होगा चाँद (कहानी संग्रह), हिन्दी कहानी के विविध आन्दोलन(शोध ग्रंथ), आज का एकलव्य(कविता संकलन), सोच की तीलियाँ (ग़ज़ल संग्रह), उजाले की तलाश(कहानी संग्रह), सोच की तीलियाँ(ग़ज़ल संग्रह), बादबान(ग़ज़ल संग्रह) सन्नाटे का शोर(ग़ज़ल संग्रह), आइना गूंगा नहीं (ग़ज़ल संग्रह)।
संपर्क- प्रजापति भवन, मेन रोड, राउरकेला-769001 (ओड़िशा)
दूरभाष : 0661-2500680
मो.- 09437044680

1. आइना ही आइना है

आदमी की आँख क्या है
दिल का सीधा रास्ता है

किसके रोके से रूका है
वक़्त तो इक बेवफ़ा है

जिस जगह वो बरहना है
आइना ही आइना है

सीना ताने घूमता है
ये उसी का हौसला है

फेर कर मुँह चलने वाला
वो मिरा ही आश्ना है

हाथ में कुछ भी नहीं है
आपकी औक़ात क्या है ?

हाथ ख़ूँ से रँगने वाला
वो 'कुमार' अब देखता है

2. इरादा है न भूलें ....

यहाँ जो भी किसानी कर रहे हैं
वो अपना ख़ून पानी कर रहे हैं

जो सपने लिख रहे हैं पानियों पर
ख़राब अपनी जवानी कर रहे हैं

हमारी शख़्सियत रद्द करने वाले
हक़ीक़त को कहानी कर रहे हैं

इरादा है न भूलें ज़िन्दगी भर
तुझे हम मुँहज़बानी कर रहे हैं

दुआ उनके लिए मैं कर रहा हूँ
जो मुझपे मेहरबानी कर रहे हैं

ज़माने में मुहब्बत करने वाले
दिलों पर हुक्मरानी कर रहे हैं

ज़रूरत है 'कुमार' अब बोलने की
बहुत ये लन्तरानी कर रहे हैं

3. प्यार लोगों में बाँटकर देखो

मैं अगर दरम्याँ नहीं होता
ऐसा हिन्दुस्ताँ नहीं होता

प्यार लोगों में बाँटकर देखो
प्यार में कुछ जियाँ नहीं होता

उसका इज़हार आँख करती है
जो ज़बाँ से बयाँ नहीं होता

नाव नहीं लगती किनारे से
तू अगर बादबाँ नहीं होता

उड़ने वाला जमीं पे आयेगा
वो सरे-आसमाँ नहीं होता

तन के क़ातिल से बात करता है
हौसला बेज़बाँ नहीं होता

आँख रोये तो अश्क बहते हैं
दिल जले तो धुआँ नहीं होता

उसका सिक्का 'कुमार' चलता है
ज़िक्र उनका कहाँ नहीं होता

क्रांति कनाटे की पाँच कविताएँ

क्रांति (येवतीकर)कनाटे
जन्म : 05, नवम्बर 1954
जन्म स्थान : सनावद(म.प्र.)
शिक्षा : एम.ए. (अंग्रेजी साहित्य)
भाषा ज्ञान : मराठी, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू तथा गुजराती।
प्रकाशन : 'अपनी-अपनी धूप'(काव्य संग्रह), 'पक्षी उड़ आयेंगे' (महेंद्र सिंह जाडेजा के गुजराती काव्य संग्रह का हिन्दी अनुवाद), 'जेता'(कर्ण के अंतिम समय पर आधारित काव्य नाटक), 'एमिली डिकिंसन की कविताएँ' (अनुवाद संग्रह) प्रकाशित।

संपर्क : - 203, टॉवर-3, सांईनाथ स्क्वेयर, मदर्स स्कूल के पीछे, जलाराम चौकड़ी, वडोदरा-390021 (गुजरात)
मो.-099042 36430

1. पता नहीं क्या था

मेरा, तुम्हारे पास आना
तीर-बिंधे हंस का
तीर-बिंधे हंस का
सिद्धार्थ के पास आना था;

तुम्हारा मुझे
देवव्रतों को सौंप देना
पता नहीं क्या था।

2. बीनती हूँ

बीनती हूँ गेहूँ,
बीनती हूँ, चावल,
धनिया, जीरा,
मूँग, मसूर, अरहर
पर असल में
बीनती हूँ केवल कंकर।

कहने को
अनाज बदला होता है
मेरी थाली में हर दोपहर।

3. उत्तरार्द्ध

उत्तरार्द्ध में आकर
सबकी भूमिकाएँ बदल गई हैं,
सारे चेहरे बदल गए हैं
या कौन जाने फिर से
मुखौटे बदल गए हैं।

कल तक जिनके बिना
सारे सुख-दु:ख अधूरे थे,
कल तक जिनके बिना
कोई व्यंजन स्वादिष्ट
नहीं लगते थे,
कल तक जिन्हें लेने-छोड़ने
हम उनके घर तक जाते थे,
अब उनके फोन भी आते हैं तो
''हम घर पर नहीं होते''।

उत्तरार्द्ध में आकर
सारे बदल गए समीकरण।
दादा-दादी, नाना-नानी बनते ही
समझदार हो गए माता-पिता,
दूसरी बहू के आते ही नरमा गई सास,
सत्ता में बैठते ही
विपक्ष के ढीले पड़ गए तेवर
और अल्पमत में आते ही
बहुमत के बदल गए भाषण।
मुझे इन दिनों
बहुत याद आती है नानी
अक्सर कहा करती थी,
''ये ऊँच-नीच, ये लेन-देन,
ये भेद-भाव दुनिया का
तुम बड़ी हो जाओगी तो
अपने आप समझ जाओगी''।
आज अगर होती तो मुझे देखकर
बहुत खुश होती नानी।

4. डर

आइने के सामने
आइना रखो तो
बनते हैं अनंत प्रतिबिंब
हम सब यह अच्छे से जानते हैं
तभी तो कभी खुद को
खुद के सामने नहीं रखते।

5. अगवानी

हमें ही खुद उठकर
करनी होती है
प्रकाश की अगवानी,
वह कभी दरवाज़े पर
दस्तक नहीं देता
हवा की तरह।

लोकगाथाओं एवं लोकगीतों का महत्व

डॉ. ए. एल. श्रीवास्तव

लोकगाथाओं और लोकगीतों ने बड़ी लम्बी यात्रा की है। इनके स्रोत प्राचीनतम साहित्य ऋग्वेद तक जाते हैं, जहाँ 'पुरूरवा और उर्वशी' तथा 'यम-यमी' गाथाओं में हमारी प्रेमगाथाओं का बीजमंत्र सन्निहित है। इसी प्रकार पुराणों और महाकाव्यों ने भी लोकगाथाओं और लोकगीतों की यात्रा में अपना अमूल्य सहयोग दिया है। संभवतः इसीलिए इन लोकगाथाओं और कथागीतों को मिथक अथवा पुराणगाथाएँ भी कहा जाता है। यह कहना कदाचित् अनुपयुक्त न होगा कि हमारी वर्तमान लोकगाथाओं और कथागीतों में शताब्दियों का अलिखित इतिहास छिपा हुआ है। लोक-साहित्य और लोक-संस्कृति की इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से संपन्न इन लोकगाथाओं तथा लोकगीतों ने हमारे परिनिष्ठित साहित्य को उत्साहित किया है, उत्कर्ष प्रदान किया है।

लोकगाथाएँ लोकजीवन की मनोरम झाँकियाँ हैं। वे माधुर्य और जीवन-रस से ओतप्रोत हैं। उनमें लोक-विश्वासों, लोक-विचारों, लोक-मान्यताओं, लोकानुष्ठानों तथा लोक-व्यवहारों का निर्मल-नैसर्गिक और नेह-भरा सम्पूर्ण लोकजीवन लहराता है। यही लोकगाथाएँ उस लोकजीवन के लिए प्राणवायु सरीखी हैं जो उसे प्रकृति के साथ सजने-सवँरने, नाचने-गाने और मोद मनाने हेतु नवल-धवल जीवन और जिजीविषा प्रदान करती हैं।

लोकगाथाएँ विविध विषयों से सम्बन्धित होने के कारण उन्हें कई वर्गों में रखा जा सकता है, जैसे-धार्मिक गाथाएँ, प्रेमगाथाएँ, भक्तिगाथाएँ, वीरगाथाएँ आदि। एक बात और जन्मना क्षेत्रीय होकर भी ये गाथाएँ अपने आकर्षक तथा प्रेरणादायक स्वरूपों के कारण भौगोलिक सीमाओं में सिमटी न रहकर जनपद, प्रान्त, देश और यहाँ तक कि सारे संसार के लोकमानस और लोककण्ठों में जा बसी हैं। ढोला-मारू, हीर-राँझा, भरथरी, हरदौल, चन्द्रावती, जाहरपीर आदि की लोकगाथाएँ इस बात के उल्लेखनीय साक्ष्य हैं। एक क्षेत्र से अनेक क्षेत्रों में लोकगाथाओं और लोकगीतों के प्रचलन का एक अन्य महत्वपूर्ण कारण है, उनकी गेयता। लोकगाथाएँ वस्तुतः लोकजीवन के गीतिकाव्य कही जा सकती हैं। इनमें रची-बसी गीत-संगीत की प्रेरक यह गेयता इनके शीघ्र लोकप्रिय होने का एक प्रमुख कारण है। गद्य की अपेक्षा पद्य शीघ्र कण्ठस्थ हो जाता है। इस तथ्य का जीवन्त साक्ष्य हमारा साहित्य है जो इस बात का साक्षी है कि पहले काव्य साहित्य रचा गया और गद्य साहित्य बाद में।

लोकगाथाओं में आदर्श की स्थापना की गयी है, ऐसा कहना सच नहीं है। उनमें जीवन का यथार्थ चित्रण है। लोकगाथाओं और लोकगीतों में मानव, पशु, पक्षी तथा वनस्पति, समस्त प्रकृति के बीच पारस्परिक संवाद चलता हे। उनमें एक-दूसरे पर निर्भरता, एक-दूसरे की रक्षा का दायित्व-बोध, 'जियो और जीने दो' की भावना प्रबल है। प्रेमासक्ति और तज्जनित स्वार्थ, स्पर्धा और घृणित कार्यों का लेखा-जोखा भी इनमें बिना किसी लाग-लपेट के प्रकट होता है। किन्तु अंतिम लक्ष्य मानवीय ही रहता है-'**सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।**'

लोकगाथाओं और लोकगीतों का सामाजिक और

सांस्कृतिक दृष्टिकोणों से विस्तृत अध्ययन और शोध की आवश्यकता है। वस्तुत: जीवन की अंधकार-भरी आपा-धापी में आज न हमारे कोई सामाजिक सरोकार रह गये हैं और न सांस्कृतिक मूल्य। नीति-अनीति की परिभाषाएँ गड्ड-मड्ड हो गयी हैं। हमारा लक्ष्य समष्टिगत न रहकर व्यष्टिगत हो गया है। आज जब हमारे लिए समाज का कोई महत्व ही नहीं रह गया है तब सामाजिक सरोकार कैसे? प्रेम भी अपनी आत्मा खो बैठा है, मात्र उसकी काया बची है जो स्वार्थ और वासना के वशीभूत है। इसका कारण स्पष्ट है। पहले प्रेम में अपनत्व की भावना रची-बसी रहती थी। पास-पड़ोस, समाज, देश आदि के साथ-साथ पशु, पक्षी एवं प्रकृति के साथ भी हमारे सम्बन्ध नि:स्वार्थ भाव से, त्याग की भावना से और नैतिक मूल्यों से जुड़े होते थे। इसका पाठ हमें शैशव अवस्था से ही दादी-नानी की पुरा-कथाओं से अथवा गाँवों में चौपालों और चबूतरों के बीच प्रसरित गलियारों के मुक्तांगन में मंचित लोकगाथाओं और लोकगीतों से मिलता था। आगे चलकर पाठशालाओं में भी पाठ्यक्रमों के अंतर्गत वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि के आधार पर संकलित यही लोकगाथाएँ और गाथाएँ और कथागीत ही होते थे। अब वे संस्कार स्रोत शेष नहीं रहे और इसीलिए कोई सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकार भी नहीं रह पाये।

मेरा बचपन उत्तरप्रदेश के उन्नाव जनपद में गंगा-परिक्षेत्र के एक ग्राम्य वातावरण में बीता है, जहाँ वर्ष भर खेल-तमाशे हुआ करते थे। लिल्ली घोड़ी के लोकनृत्य, चारण-भाटों का इकतारे अथवा सारंगी पर वीर नायकों की प्रशस्ति...गायन, सावन माह में ढोलक की थाप पर आल्हा की रोमांचक तानें, होली के अवसर पर राजा भरथरी का रोचक स्वाँग आदि-आदि आज भी यदाकदा मेरे मनश्चक्षुओं के समक्ष जीवन्त हो उठते हैं। ये खेल-तमाशे भी लोकगाथाओं का ही अंग थे, जो मनोरंजन के साथ-साथ मानवीय मूल्यों की सीख भी देते थे।

प्रसन्नता की बात है कि ब्रजकला-केन्द्र, मथुरा ने लोकगाथाओं तथा लोकगीतों के शोधपरक अध्ययन की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है। अप्रैल 1996 ई. में आयोजित एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी के माध्यम से लोकगाथा-समारोह में देशभर के लोक-संस्कृति विशेषज्ञों का समागम किया गया। उस संगोष्ठी में विभिन्न प्रान्तों में प्रचलित लोकगाथाओं पर गहन विचार-मंथन के बाद यह तथ्य उभरकर आया कि अधिकांश लोकगाथाओं का मूल ब्रज-भूमि से जुड़ा है। तत्पश्चात् ब्रजकला केन्द्र से जुड़े श्रीरामनारायण अग्रवाल तथा डॉ. नरेशचन्द्र बंसल के संयुक्त संपादन में 1998 में 'ब्रज की लोकगाथाएं और कथागीत' नामक ग्रंथ का प्रकाशन हुआ।

लोक-संस्कृति के केवल एक पक्ष 'लोकगाथाएँ और कथागीत' पर प्रकाशित उक्त ग्रंथ एक विशद्, विश्लेषित, विभाषित और विचारित रूप में प्रस्तुत किया गया। विशद् इसलिए क्योंकि ब्रज की गाथाओं और कथागीतों का विस्तार-क्षेत्र व्यापक है। ब्रज के चतुर्दिक उत्तरप्रदेश, पंजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश, सौराष्ट्र आदि प्रान्तों में भी ये लोकगाथाएँ कतिपय हेर-फेर के साथ लोक-विश्रुत हैं। विश्लेषित इसलिए क्योंकि उन क्षेत्रों में प्रचलित ब्रज भी इन लोकगाथाओं और कथागीतों की प्रकृति और उनका ब्रज से अन्तर्सम्बन्ध दर्शाने तथा उनके मौलिक स्वरूप और स्थान का सुनिर्धारण करने का सफल प्रयास उक्त प्रकाशन के पन्ने-पन्ने पर प्रतिष्ठित है। विभासित इसलिए क्योंकि अनेक लोकगाथाओं के नाम और उनका आधा-अधूरा परिचय भले ही जनसामान्य को रहा हो, परन्तु इस प्रकाशन ने उन्हें विस्तार से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है और सुविचारित इसलिए क्योंकि समस्त देश के मूर्धन्य, लोक-संस्कृति के सुविज्ञ विद्वानों को त्रिदिवसीय संगोष्ठी में एक मंच पर लाकर, उनको पारस्परिक विचार-विनिमय का स्वर्णिम संयोग प्रदान कर तथा उनमें हुयी चर्चा-परिचर्चा के मंथन से जो नवगीत निसृत हुआ, वही इस ग्रंथ के रूप में प्रादुर्भूत हुआ।

भारतीय कला और संस्कृति की विदुषी पद्मश्री डॉ. कपिला वात्स्यायन के शब्दों में ''गाथा अपने में लोक साहित्य की चारू विधा है। इसमें पद्यात्मकता है, गेयता है, लालित्य है, सौष्ठव है। इसीलिए यह लोक-साहित्य की अन्तरात्मा है। ये लक्षण हमें संस्कृति के बहुत निकट पहुँचाते हैं और कहीं गहरे अंतरंग में संस्कृति का बोध उपजाते हैं।''

1-बी, स्ट्रीट 24, सेक्टर 9, भिलाई-490009 (छत्ती.) मो.-098278 47377 ■

स्मृति शेष

नागजी पटेल का जाना बड़ी खाई है इसे भरने में समय लगेगा : रॉबिन डेविड

नागजी पटेल पर मूर्तिकार रॉबिन डेविड से भँवरलाल श्रीवास की अंतरंग बातचीत

सुबह के नौ बजे शिल्पकार रॉबिन डेविड के निवास स्थान गुलमोहर पर भरे मन से पहुँचा। डेविड जी अपाईन्टमेंट के अनुसार इंतजार कर रहे थे, उनसे पत्थर में एक साथ सपने और विचार डालने वाले शिल्पकार नागजी पटेल के बारे में चर्चा हुई।

चर्चा से कई अनछुए बिन्दु निकलकर आये, नागजी पटेल का मूर्ति उकेरने का अपना एक बड़ा सिम्पल तरीका था और विषयवस्तु सब्जेक्टिव। नागजी भाई ने अपने सिलेक्टेट वर्क बड़ौदा में जरूर रख छोड़े हैं पर उनके शिल्प संसार की शुरूआत हैदराबाद से हुई। उन्होंने खासतौर पर 'पिलर' को लेकर काम किया हैं।

डेविड जी ने मन को छूने वाली बात साझा की कि अलबिदा से ठीक दो दिन पहले 17 दिसम्बर 2017 को वे साथ बैठने वाले थे, शायद फिर किसी अमूर्त को मूर्तमान करने पर विधि को यह मंजूर नहीं था।

डेविड जी याद करते हैं कि नागजी भाई से उनकी पहली मुलाकात 1973 में हुई, उस समय डेविड एक साधारण छात्र थे, भारत भवन से सम्पर्क ने फिर नागजी भाई से मिलने का सुयोग बनाया। उनकी कला को देखकर मैंने कई सबक सीखे और लगातार मित्रवत प्रेरणा पाता रहा।

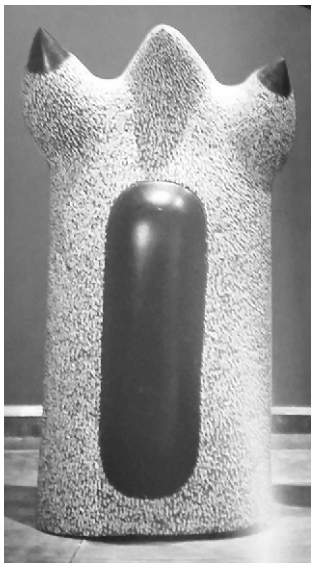

नागजी भाई का सृजन देश की सीमाओं के पार विदेश में न सिर्फ चिन्हित हुआ बल्कि विदेशी शिल्पकारों के लिये भारतीय कला कोष के द्वार खोल पाया। नागजी भाई को निर्विवाद रूप से यह श्रेय जाता है कि उन्होंने विदेशी मूर्ति शिल्प की अवधारणाओं को अपने देश के पत्थरों तक पहुँचाया।

बातचीत में मैं खुद भी अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखने में सफल नहीं हो पाया, मैं भावुक होकर डेविड जी से अपनी स्मृतियों को बांटने लगा। मुझे याद आया अयोध्या बायपास भोपाल के पास एक पार्क में लाल पत्थरों पर नागजी भाई के किये गये काम हमेशा के लिए भोपाल को सौभाग्य दे गए। भारत भवन में उनके अद्वितीय शिल्प न मात्र देशवासी वरन् सभी विदेशी कला प्रेमियों के लिए अमिट मिसाल और अमूल्य सौगात की धरोहर सुरक्षित हैं।

उनके परिवार में उनकी अर्धांगिनी के साथ एक बेटा व एक बेटी बड़ौदा में निवास करते हैं। उन्होंने विदेश की अनेकानेक यात्राएँ की साथ ही अपने गाँव पर लगातार फोकस

बनाये रखा। वहाँ वे जब भी समय मिला मूर्तियाँ गढ़ते रहे। यह कलेक्शन बड़ौदा में 'नज़र' नामक आर्ट गैलेरी में दर्शनीय है। 'नजर' की देखभाल उनकी बेटी करती है। उनकी पत्नी भी मूर्तिकार है जो ब्रॉस मेटलिक अलॉय पर काम करती है तथा उनका बेटा पेंटर है जो पूरी लगन से रंग और कूची सम्हाले हुए है।

नागजी पटेल के व्यक्तित्व का एक यह पहलू भी है कि वे कहते हैं 'बड़ी मूर्तियों की शुरूआत रॉबिन डेविड ने की है।' डेविड जी आद्र मन से बतलाते हैं 'मैं नागजी भाई से उम्र में बहुत छोटा हूँ पर बड़ी मूर्ति बनाने का क्रेडिट मुझे देना उनके विशाल हृदय का छाप छोड़ने वाला नमूना है।'

नागजी भाई कहते रहे 'रॉबिन मुझे राजेन्द्र टीकू, श्रीनिवास रेड्डी, राजीव नेन आदि से बड़ी उम्मीदें हैं।'

मैंने पूछा–और.....।

डेविड जी ने कहा 'नागजी पटेल का जाना बहुत बड़ी खाई हैं, इसे भरने में वक्त लगेगा।'

मैंने डेविड जी से विदाई ली। मैं सोच रहा हूँ, देश ने एक सरल और प्रतिभावान मूर्तिकार खोया है पर आधुनिकीकरण इस कमी को कब और कैसे पूरा कर पायेगा!!

■

भारत भवन में नागजी पटेल शिल्पकार को भावाञ्जलि

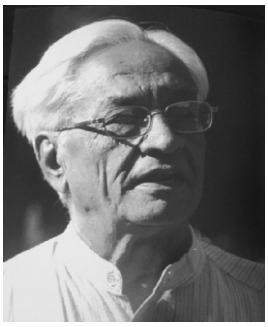

शोक प्रस्ताव – 1937 में गुजरात में जन्में सुविख्यात कलाकार नागजी पटेल के असामयिक निधन से हम सब शोक संतप्त हैं। आदरणीय नागजी पटेल का भारत भवन से रचनाशीलता और रागात्मकता का रिश्ता रहा है। नागजी पटेल हमारे देश के ऐसे शिल्पकार हैं जिन्होंने पत्थर शिल्प में अनूठेपन के साथ जीवन के साधारण या सहज पक्षों को गहरी संजीदगी से अपने शिल्पों में उकेरा और दुनिया के कला जगत में उनके कलात्मक काम की व्यापक सराहना भी हुई। नागजी पटेल न केवल अपने देश में बल्कि पूरी दुनिया में अपने शिल्पों की वजह से अलग से पहचाने जाने वाले कलाकार रहे हैं, बल्कि शिल्प की प्रविधि को उत्कर्ष और वैविध्य देने में उनका अप्रतिम योगदान भी रहा है। देश–दुनिया में आयोजित वाइनियल या अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी के समारोहों में उनके शिल्प भी आमंत्रित किये जाते रहे हैं और दुनिया के कला रसिकों और कला विशेषज्ञों के बीच उनके पत्थर शिल्प हमेशा आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। एम.एस.यूनीवर्सिटी, बड़ौदा से स्कल्पचर में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद आप शिल्पों की संरचना में लगातार सक्रिय हुए और अपने रचनात्मक कामों से आपने ख्यातिपूर्ण मुकाम हासिल किया।

नागजी पटेल को देश–दुनिया के अनेक बहुप्रतिष्ठित पुरस्कार सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिसमें म.प्र. सरकार के कालिदास सम्मान से भी उन्हें अलंकृत किया गया है। भारत भवन और म.प्र. शासन, संस्कृति विभाग से नागजी पटेल का बहुत लम्बा और गहरा आत्मीयता का नाता रहा है। उनके निधन से हमने एक गुणी और लब्धप्रतिष्ठ कलाकार खोया है, लेकिन उनके द्वारा रचे गये शिल्प हमारे कला जगत की अमूल्य धरोहर हैं और युवा और युवतर कलाकारों के लिए प्रेरणादायी भी हैं।

बहुकला केन्द्र भारत भवन, म.प्र. शासन संस्कृति विभाग, अकादमियों आदि की तरफ से सम्माननीय श्री नागजी पटेल के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। अंत में दो मिनट का मौन रखा गया।

मानस भवन के सभागार में 27 दिसम्बर 2017 की सायं को भोपाल गान और मध्यप्रदेश गान के विरचित एवं वरिष्ठ पत्रकार महेश श्रीवास्तव को सरस्वती सम्मान से विभूषित किया गया। नगर निगम भोपाल का यह स्थापित सम्मान मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर आलोक शर्मा महापौर भोपाल सहित गणमान्य अधिकारी मंत्री, पत्रकार, समाज सेवी, संस्था के पदाधिकारी मौजूद थे, आयोजन में महेश श्रीवास्तव की पत्नीश्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव, बड़े भाई डॉ. डी.पी. श्रीवास्तव विशेष रूप से मौजूद थे।

शब्द साधक महेश श्रीवास्तव 'सरस्वती सम्मान' से अलंकृत

श्री महेश श्रीवास्तव, जिन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किए, साहित्य की सेवा की एवं चिन्तन एवं विचार के मार्ग में नवीन दिशाओं की तलाश की।

स्वर्गीय श्री प्रभुलाल जी श्रीवास्तव एवं श्रीमती लक्ष्मी बाई श्रीवास्तव के पुत्र श्री महेश श्रीवास्तव तलेन में जन्मे और भोपाल तथा अन्य स्थानों पर शिक्षा ग्रहण कर उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर के साथ विधि स्नातक की उपाधि प्राप्त की। महान साहित्यकार अज्ञेय द्वारा सम्पादित 'दिनमान' के प्रदेश प्रतिनिधि रहे और दैनिक भास्कर के सम्पादक पद को सुशोभित किया। दैनिक भास्कर में प्रकाशित उनकी विशेष सम्पादकीय टिप्पणियों ने लोकप्रियता के अपूर्व कीर्तिमान बनाए। सत्य के प्रति निष्ठा, विचारों की निष्पक्षता, भाषा का संस्कार और संस्कृति के समावेश ने सम्पादकीय लेखन की नई शैली विकसित की। भास्कर से सेवानिवृत्ति के पश्चात आप राज एक्सप्रेस और पीपुल्स समाचार के संस्थापक प्रधान सम्पादक तथा पत्रकारिता संस्थान के कार्यपालक निदेशक भी रहे। वर्तमान में आप मध्यप्रदेश शासन की प्रदेश स्तरीय राष्ट्रीय एकता समिति में उपाध्यक्ष के पद पर हैं।

श्री महेश श्रीवास्तव ने अपने पत्रकारिता कर्म, सद्भावना, संगोष्ठी अथवा व्याख्यान के संदर्भ में विश्व के 33 देशों की यात्राएँ की, उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक उन्होंने अपने देश में भ्रमण किया। मध्यप्रदेश की स्थापना के अवसर पर उनकी संग्रहणीय पुस्तक 'प्रणाम मध्यप्रदेश' प्रकाशित हुई। आप और आपके भाई डॉ. दामोदर जी ने यहां पुस्तकालय की स्थापना की। तलेन के लिए यह गौरव की बात है कि आपका लिखा हुए 'मध्यप्रदेश गान' प्रदेश का राज्यगान घोषित हुआ है। प्रदेश की जीवन रेखा 'नर्मदा' पर आपकी पुस्तक 'वरदा-नर्मदा' प्रकाशन में है और मध्यप्रदेश के वनों एवं वन्य प्राणियों पर भी आप एक पुस्तक लिख रहे हैं। आपकी विशेष सम्पादकीय टिप्पणियों का संकलन 'किलपन' और भोपाल के इतिहास पर पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है। 'आवर्त' और 'कान्हा में कविता' के काव्य संकलनों के प्रकाशन के बाद महाभारत के पात्र 'कर्ण' की पीड़ा पर आपका प्रबंधकाव्य प्रकाशनाधीन है।

पत्रकारिता के क्षेत्र में 'माखन लाल चतुर्वेदी' साहित्य के क्षेत्र में 'अक्षर आदित्य' एवं 'भारत भाषा भूषण' जैसे शीर्ष सम्मानों से सम्मानित हुए।

■

समवेत

कला विशेषज्ञ डॉ. मुक्ति पाराशर सम्मानित

विश्व ''एलिमिनेशन ऑफ वाइलेन्स अगेस्ट वूमन डे'' 25 नवम्बर 2017 ई. को नई दिल्ली में कोटा (राजस्थान) की जानी-मानी कला विशेषज्ञ डॉ. मुक्ति पाराशर को सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान भारतीय कला, साहित्य एवं महिला समाजोत्थान में सामाजिक सरोकार एवं शिक्षा कला द्वारा चेतना उत्पन्न करने के कार्यों में विशिष्ट भूमिका के लिये दिल्ली के इण्डिया इन्टरनेशनल सेन्टर में प्रदान किया गया। समारोह का आयोजन इण्डो यूरोपियन चेम्बर्स ऑफ कामर्स, स्माल एण्ड मिडियम इन्टर प्राइजेज एवं योग कान्फीडेरेशन ऑफ इण्डिया भारत सरकार द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. मुक्ति पाराशर को भारत सरकार की केन्द्रीय मंत्री श्रीमती कृष्णाराज, सांसद उदितराज एवं भारत सरकार के पूर्व सचिव कमल तॉवरी ने शाल पहनाकर एवं रजत पदक तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर उक्त समारोह में देश एवं विदेश की उन 50 महिलाओं को भी सम्मानित किया गया जो महिला उत्थान के सामाजिक सरोकारों में विभिन्न कार्य कर रही हैं।

डॉ. श्रीराम परिहार उत्तरप्रदेश में सम्मानित

खंडवा। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ का प्रतिष्ठित साहित्य भूषण सम्मान डॉ. श्रीराम परिहार को उनके समग्र लेखन के लिए देने की घोषणा की गई है। सम्मान में शाल-श्रीफल, सम्मान पत्र और दो लाख रूपए की सम्मान निधि भी प्रदान की जायेगी। सम्मान लखनऊ में 22 जनवरी 2018 को भव्य समारोह में प्रदान किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि ललित निबंधकार श्रीराम परिहार की 18 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके लिखे ललित निबंध, नागपुर, वर्धा, औरंगाबाद, जलगांव और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में पढ़ाये जा रहे हैं। लगभग आधा दर्जन देशों की यात्रा कर चुके डॉ. परिहार को राज्य एवम् राष्ट्रीय स्तर पर 25 से अधिक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। वे स्थानीय कन्या महाविद्यालय एवं नीलकंठेश्वर महाविद्यालय में प्राचार्य रह चुके हैं। निमाड़ की माटी से उपजे देश के इस सुप्रसिद्ध साहित्यकार को सम्मान मिलने पर शहर के सभी साहित्यकारों ने बधाई दी है।

ममता कालिया जी को व्यास सम्मान

हिन्दी की वरिष्ठ साहित्यकार ममता कालिया जी के उपन्यास 'दुक्खम-सुक्खम' को वर्ष 2017 के व्यास सम्मान के लिए चुना गया। उक्त सम्मान केके बिरला फाउंडेशन द्वारा स्थापित पुरस्कार है। बधाई।

राम अधीर को सुदीर्घ साधना सम्मान एवं मुकेश वर्मा को कमलेश्वर सम्मान से सम्मानित करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार मंजूर एहतेशाम एवं संतोष चौबे ।

दुष्यंत कुमार पाण्डुलिपि संग्रहालय ने रचनाधर्मियों का किया सम्मान

दुष्यंत कुमार पाण्डुलिपि संग्रहालय द्वारा प्रणाम 2017 में 28 से 30 दिसम्बर को आयोजित तीन दिवसीय समारोह में यश मालवीय को 'दुष्यंत कुमार सम्मान', राम अधीर को 'सुदीर्घ साधना सम्मान', महेश कटारे को 'सुगम आंचलिक भाषा सम्मान', मुकेश वर्मा को 'कमलेश्वर सम्मान', महेश सक्सेना को 'डॉ. कन्हैयालाल नन्दन सम्मान', विजय वाते को 'श्री विट्ठलभाई सम्मान', अशोक मनवानी को 'श्री राजेन्द्र जोशी सम्मान', डॉ. नीलकमल कपूर को 'डॉ. सुषमा तिवारी सम्मान', अनिल मुद्गल (आरूषि संस्था) को 'ब्रजभूषण शर्मा सम्मान', उपक्रम बाल्को को 'अखिलेश जैन सम्मान', अनवारे इस्लाम को 'डॉ. विजय शिरढोणकर सम्मान', शिवकुमार यादव को 'डॉ. बाबूराव गुजरे सम्मान', डॉ. अरविन्द सोनी को 'अंशलाल पन्द्रे सम्मान' से सम्मानित किया गया।

श्रीनाथद्वारा में सम्मान समारोह

डॉ. उर्मिला शर्मा को 'साहित्य सौरभ' एवं बंशीधर बंधु को 'साहित्य कुसुमाकर' सम्मानोपाधि से अलंकृत किया गया।

हिन्दी भाषा को समर्पित श्रीनाथद्वारा (जिला राजसमन्द) के राष्ट्रीय साहित्य मण्डल हिन्दी संस्थान द्वारा 6 जनवरी 2018 को आयोजित हिन्दी सेवी 'राष्ट्रीय भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति सम्मान' समारोह के इस दो दिवसीय राष्ट्रीय समारोह में देश के 9 राज्यों के 3 दर्जन साहित्यकारों तथा सम्पादकों को सम्मानित किया गया।

पन्द्रहवीं शरद व्याख्यानमाला एवं सम्मान समारोह तथा अक्षरा साहित्य मासिकी का लोकार्पण

इस अवसर पर वाङ्मय विषयों पर हिन्दी में मौलिक लेखन हेतु 'श्री नरेश मेहता स्मृति वाङ्मय सम्मान' से नर्मदा प्रसाद उपाध्याय को अलंकृत किया गया तथा 'श्री शैलेश मटियानी स्मृति चित्रा कुमार कथा पुरस्कार' युवा कथाकार पंकज सुबीर को प्रदान किया गया। समारोह में 'अक्षरा' के मासिक प्रकाशन की शुरूआत के साथ (जनवरी 2018) के अंक का लोकार्पण भी हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. मुरली मनोहर जोशी और अध्यक्षता रमेश चन्द्र शाह ने की। इसी अवसर पर सुशील कुमार केडिया(प्रबंध संपादक-अक्षरा), राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अध्यक्ष-सुखदेव प्रसाद दुबे, कैलाशचन्द्र पन्त (मंत्री संचालक)तथा महेश सक्सेना(सहायक मंत्री) अक्षरा के संपादक-डॉ. सुनीता खत्री उपस्थित थे। इस समारोह में अंशु जौहरी के काव्य संग्रह 'तुम से जुड़े बिना' और अर्पणा शर्मा के काव्य संग्रह 'भाविनी' का लोकार्पण भी सम्पन्न हुआ।

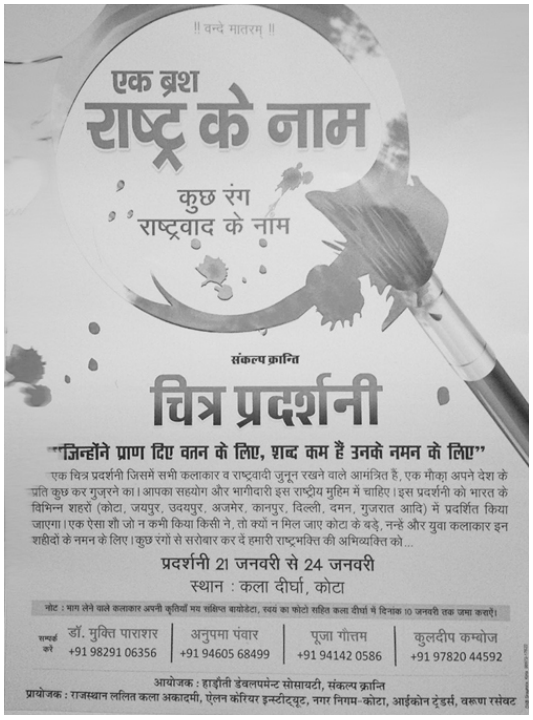

भूल सुधार : अंक अक्टूबर-नवम्बर 2017 में प्रकाशित श्री मोहन शिंगणे के साक्षात्कार में पृष्ठ संख्या-12 पर प्रकाशित अन्तिम चित्र उस शिल्प की मूर्तिकार इटली की सुश्री 'मारिया ग्राजिया' है। यह शिल्प बड़ौदा के 'उत्तरायण' में प्रदर्शित है। इस भूल हेतु श्री शिंगणे व सुधि पाठकों से क्षमा प्रार्थी है-कला समय।

56 वाँ पंचाक्षर संगीत समारोह

27 दिसम्बर 2017 को भारत भवन में परम पूज्य गानयोगी पंचाक्षरजी की 73 वीं पुण्यतिथि तथा डॉ. पुट्टराज गवई जी की सप्तम् पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में 56 वें पंचाक्षर संगीत समारोह में आश्रम के शिष्यों द्वारा प्रार्थना की गई, शिष्या सुश्री रूचिका पाण्डे के द्वारा राग भीमपलासी में तीन ताल में दो बन्दीशें **नादभेद को ब्रह्म ही जानत** एवं **तराना** तत्पश्चात् तुलसीदास जी का भजन तथा वायलिन वादक सुश्री चैताली शेवलीकर के द्वारा **राग विहाग** में एक ताल तथा तीन ताल में बन्दिशें प्रस्तुत की गई। ग्वालियर के श्री उमेश कम्पुवाले को मुख्य अतिथि, प्रो.बी.के.कुठियाला तथा विशिष्ट अतिथि कर्नल डॉ. भारतभूषण 'वत्स' के द्वारा 2017 **'पुट्टराज गौरव सम्मान'** से सम्मानित किया गया।

कैलाश मंडलेकर को प्रथम ज्ञान चतुर्वेदी व्यंग्य सम्मान

कैलाश मंडलेकर को प्रथम ज्ञान चतुर्वेदी व्यंग्य सम्मान 2017 से सम्मानित हुए। आयोजन समिति व्यंग्य लेखक संघ और दूसरी परंपरा पत्रिका लखनऊ के बेनर तले स्वराज भवन में दिनांक 23 दिसम्बर 2017 को डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी के हाथों यह सम्मान दिया गया। मुख्यअतिथि डॉ. अंजनी चौहान सहित वरिष्ठ साहित्यकार व्यंग्यकार मौजूद थे।

रूपाभ : समकालीन कलाकारों की कृतियों की प्रदर्शनी श्रृंखला के अंतर्गत भारत भवन में

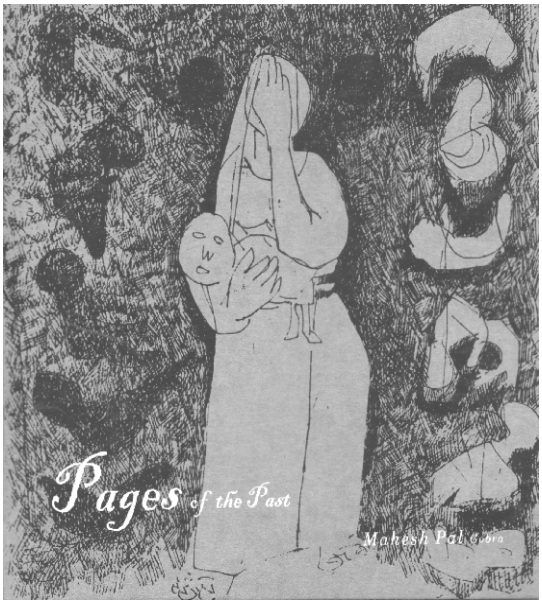

महेश पाल
की चित्रकृतियों की एकल प्रदर्शनी
5–10 दिसम्बर 2017

मैं जब भोपाल आया तो यहाँ के सुरम्य, मनोहर ताल-तलैयों और मनोरम हरियाली ने मुझे आनंद से भर दिया। पर अंतर्मन में सदैव एक पीड़ा का भाव दबा-छिपा अकुलाता रहा, समझ नहीं पा रहा था कि यह क्या है ? क्यों है ?

कहते हैं वेदना कला की जन्मदात्री होती है....यदि मनुष्य में वेदना की अनुभूति न हो तो वह मानव पशु तुल्य हो जाता है। और संभवतः ईश्वर का अनुग्रह मुझे पशुवत नहीं होने देना चाहता था अतः .....

एक दिन अचानक जा पहुँचा यूनियन कार्बाइड के कारखाने के सामने, जहाँ साक्षात् काल ने अपने तांडव से समग्र भोपाल नगरी को एक हाहाकार भरे सन्नाटे से, भर कर रिक्त कर दिया था जनमानस से।

मेरी आँखों के सामने घूमने लगे कुछ अनदेखे दृश्य, लाशों के ढेर, माताओं की सूनी गोदें, रोते, चीखते-चिल्लाते लोग, आज उस घटना को हुए चौंतीस वर्ष हो गए पर एक चित्रकार के मन में कुछ प्रश्न अब भी अनुत्तरित हैं....और उसी से जन्म लिया मेरी कलाकृति ''अतीत के पृष्ठों'' ने इन चित्रों को बनाने के लिए मैंने गोबर, गोबर की राख और गहरे धूसर रंगों का प्रयोग किया है....

यह ''चित्र वीथि'' मात्र ''मानव द्वारा निर्मित यंत्र जनित दुर्घटना'' को ही अभिव्यक्त नहीं करती बल्कि यह एक नैसर्गिक न्याय की आकांक्षा भी रखती है। न जाने वह भोर कब आएगी, जब फिर माँ की सूनी गोद आनंद से भर जाएगी, सूने घर आँगन, बच्चों की किलकारियों से, फिर गूँज उठेंगे, और गैस कांड विभीषिका से जूझता भोपाल नगर फिर जी उठेगा एक नई आस के साथ....और फिर मेरा मन एक नई संभावना से भरे चित्र को रेखांकित करने भाव-विभोर हो उठेगा और हाथ में फिर तूलिका का नर्तन होगा....

– महेश पाल, गोबरा

राज्य संग्रहालय में साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादकों का विमर्श

भोपाल : संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश शासन, मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी के तत्वावधान में 2-3 जनवरी 2018 को, राज्य संग्रहालय, भोपाल में देश की साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादकों का दो दिवसीय विमर्श संपन्न हुआ। मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के इस आयोजन में देश की कई ख्यातनाम पत्रिकाओं के संपादकों, प्रतिष्ठित वरिष्ठ साहित्यकारों में साक्षात्कार के संपादक डॉ. उमेश कुमार सिंह, राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. इंदु शेखर तत्पुरूष, श्री श्रीधर पराड़कर, डॉ. देवेन्द्र दीपक, श्री राजुरकर राज, श्री महेश सक्सेना, डॉ. श्रीराम परिहार, डॉ. गिरीश पंकज, श्री कैलाश चंद्र पंत, डॉ. हरीष नवल, प्रमुख सचिव संस्कृति विभाग श्री मनोज कुमार श्रीवास्तव, डॉ. अम्बिका दत्त, डॉ. जवाहर कर्णावट देवपुत्र के कार्यकारी संपादक श्री गोपाल माहेश्वरी, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान की संपादक डॉ. अनिता दुबे, मराठी साहित्य अकादमी के निदेशक श्री अश्विन खरे, उर्दू अकादमी की सचिव डॉ. नुसरत मेहदी, श्री गोरख नाथ तिवारी सहित श्री घनश्याम मैथिल अमृत, श्री अनिरुद्ध सेंगर, श्री नरेन्द्र दीपक, डॉ. मोहन आनन्द तिवारी, डॉ. प्रीति प्रवीण खरे, सुश्री कीर्ति श्रीवास्तव, सुश्री शालिनी खरे, श्री सत्यनारायण व्यास सम्मिलित हुए। रपट- घनश्याम मैथिल 'अमृत'

आपके पत्र

प्रिय लक्ष्मीकांत,

'कला समय' की बानगी मिली। अच्छी लगी। स्तरीय और ताज़गी व उजास भरी। श्वेत-श्याम चित्रों ने उसे और भी सुंदर बना दिया हैं। मुखपृष्ठ आकर्षित करता है। संपादकीय में सांगठनिक व्यवस्था व भविष्य के लक्ष्य का संकेत मिल जाता है और 'कला निकष' पत्रिका के कलेवर से मिलने की उत्सुकता बढ़ा देता है। निकष के प्रस्तुतिकरण की कल्पना, भाव व भाषा सार्थक व प्रांजल है। बधाई। वेगड़ जी के लेखन की सरलता व साफगोई प्रभावित करती है और रेखाओं का जादू विस्मित करता है। वाह! शानदार! विज्ञान व्रत जी के रेखांकन भी बहुत अच्छे हैं-ग़ज़लें भी। कुँवर बेचैन, मधुसुदन साहा व चेतना वर्मा की रचनाओं से एक ताज़गी भरे झोंके का एहसास होता है। साहा जी के नवगीत विशेष प्रभावी हैं। समीक्षा के अंतर्गत राशिनकर दम्पत्ति की छिटपुट पंक्तियाँ भी अच्छी लगी और अंत में निर्मिश ठाकर की वक्र रेखायें भी। साज-सज्जा उत्तम है और 'कला समय' सम्पूर्ण। उत्तरोत्तर प्रगति करे। पुनः एकदा बधाई व शुभकामनायें। **सूरज पूरी,** मुलताई (म.प्र.)

निर्मिश ठाकर की फेसबुक वॉल से

✵ कला समय ✵

शीघ्र प्रकाश्य

कला समय के साक्षात्कार

संपादन-भँवरलाल श्रीवास,

बीस वर्षों के साक्षात्कारों का वृहद संकलन; कला यात्रा का संग्रहणीय दस्तावेज

पत्रिका ही नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान

सांस्कृतिक धड़कनों का जीवंत दस्तावेज़

'कला समय' के सदस्य बनें- ❍ पत्रिका की वार्षिक/ द्वैवार्षिक / आजीवन सदस्यता ग्रहण करें। सदस्यता शुल्क मनीआर्डर, ड्राफ्ट, ऑन लाईन अथवा व्यक्तिगत रूप से भुगतान किया जा सकता है।

'कला समय' की एजेंसी के नियम- ❍ आपके गांव, कस्बे, शहर में सांस्कृतिक पत्रिका 'कला समय' की एजेन्सी के लिए सम्पर्क करें। ❍ कम से कम दस प्रतियों से एजेन्सी शुरू की जायेगी। ❍ पत्रिका कुरियर अथवा रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजी जायेगी। डाक खर्च एजेन्सी को वहन करना होगा। ❍ कमीशन, प्रतियों की संख्या के आधार पर।

स्थायी तथा सम्पादकीय पता और दूरभाष क्रमांक के साथ सम्पर्क करें- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 Email : bhanwarlalshrivas@gmail.com

लेखकों/ कलाकारों से ❍ कला-संस्कृति के अछूते पहलुओं पर सर्जनात्मक और सूचनात्मक आलेख, टिप्पणियां, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, ललित निबन्ध, कविताएँ, छायाचित्र, रेखांकन तथा शोध आमंत्रित हैं। ❍ रचनाएँ कागज के एक ओर टाइप की हुई, अथवा सुवाच्य लिपि में अंकित हों। कृपया रचना के साथ पर्याप्त डाक टिकिट लगा लिफाफा भी संलग्न करें। रचनाएँ और चित्र ई-मेल से भी भेज सकते हैं।

अनुरोध : वे सदस्य जिनका वार्षिक/ द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क समाप्त हो रहा है, कृपया अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करायें।

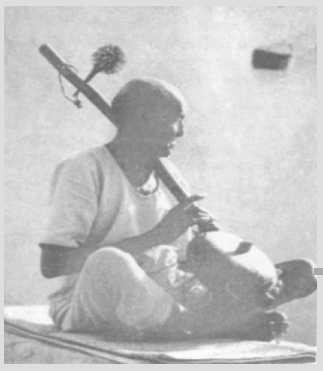

❄ **कला समय** ❄

का

आगामी विशेषांक

''विलुप्त होती लोक-कलाएँ''

अप्रैल-मई 2018

रचनाएँ, चित्र, आलेख, शोध आमंत्रित

संपर्क - जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016

फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058,

ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com / bhanwarlalshrivas@gmail.com

- संपादक

संस्था समाचार

पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' स्मृति 'शब्द शिखर' अलंकरण समारोह

26 दिसम्बर 2017 बी.आर.सी. भवन जनपद कार्यालय शुजालपुर के सभागार में मालवा लोक साहित्य परिषद् के इस प्रतिष्ठा पूर्ण आयोजन में शब्द शिखर अलंकरण समारोह तथा दो पत्रिकाओं का लोकार्पण हुआ। कला और विचार की द्वैमासिकी 'कला समय' भोपाल तथा जल संरक्षण (पर्यावरण) साहित्य व शिक्षा की शोधपरक मासिकी 'शिवम् पूर्णा' का भी लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर अलंकृत होने वाले प्रमुख साहित्यकार श्री नरेन्द्र श्रीवास्तव 'नवनीत' लोक भाषा मालवी साहित्यकार उज्जैन, श्री वेद हिमांशु लोक भाषा मालवी व हिन्दी साहित्यकार इंदौर, श्री ललित शर्मा इतिहासकार, झालावाड़ (राजस्थान), श्री बृजकिशोर तिवारी हिन्दी साहित्यकार शुजालपुर, डॉ. वर्षा नालमे हिन्दी साहित्यकार एवं सह सम्पादक 'दी कोर' दिल्ली, श्रीमती माया मालवेन्द्र 'बधेका' लोकभाषा मालवी साहित्यकार इन्दौर, श्री रामप्रसाद 'सहज' लोकभाषा मालवी साहित्यकार शुजालपुर, सुश्री जेड. श्वेतिमा निगम, लोक भाषा मालवी साहित्यकार एवं संपादक(जगर-मगर)उज्जैन इत्यादि आठ साहित्यकार को शाल श्रीफल, स्मृति चिन्ह तथा प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि बतौर भँवरलाल श्रीवास प्रधान सम्पादक 'कला समय' पत्रिका भोपाल, विशेष अतिथि श्री नितिन भट्ट मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद शुजालपुर, कन्या उ.मा.वि.(शुजालपुर मण्डी) तथा सारस्वत अतिथि श्री सजल मालवीय प्रधान संपादक 'शिवम् पूर्णा' पत्रिका भोपाल, श्री लक्ष्मीकांत जवणे सह सम्पादक 'कला समय' भोपाल, श्री गोपेश वाजपेयी, प्रो. शा. विवेकानन्द महाविद्यालय, बैरसिया उपस्थित थे। अलंकृत साहित्यकारों को श्री भँवरलाल श्रीवास प्रधान सम्पादक 'कला समय' भोपाल के द्वारा अलंकरण प्रदान किये गये। सारस्वत वक्तव्य डॉ. काज़ी एस. रहमान शुजालपुर, सारस्वत संचालन डॉ. राम मनावत ने किया। स्वागत भाषण संस्था संयोजक श्री बंशीधर 'बंधु' ने दिया। अलंकरण समारोह एवं पत्रिका द्वै के लोकार्पण के साक्षी सुधि श्रोता, साहित्यकार तथा संस्था पदाधिकारी विशेष रूप से उपस्थित थे।

संस्था समाचार

'कला समय' एवं 'शिवम् पूर्णा' पत्रिकाओं का लोकार्पण

26 दिसम्बर 2017 पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की धरती पर सम्पन्न हुआ।

शुजालपुर में 'कला समय' का अक्टूबर-नवम्बर 2017 के अंक का लोकार्पण

शुजालपुर : 26 दिसम्बर 2017 शुजालपुर में पं. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जी की पावन धरा(जन्मस्थली) में मालवा लोक साहित्य परिषद के मंच पर भव्य अलंकरण समारोह में पत्रिका द्वै का लोकार्पण हुआ। लोकार्पण समारोह में साहित्यकार, बुद्धिजीवी, श्रोता तथा गणमान्य स्थानीय नागरिक थे। श्रोताओं के बीच 'कला समय' व 'शिवम् पूर्णा' को लोकार्पित किया गया तथा लोकार्पित पत्रिकाओं के अंकों का वितरण श्रोताओं में किया गया।

शुजालपुर में 'शिवम् पूर्णा' का अक्टूबर-नवम्बर(संयुक्तांक) 2017 के अंक का लोकार्पण

नन्हें कलाकारों की दुनिया

यह मुन्नियों और मुन्नों का संसार हैं, इसमें किसी भी किस्म की बिना छापवाले वाले मनों की चौकड़ियाँ और कुलांचे हैं। इन नवांकुरों की भावी छलांगों की सम्भावनाओं को यह पृष्ठ समर्पित हैं-कला समय।

छोटी-छोटी अंगुलियों से रंग रेखा

गार्गी शिंगणे
कक्षा-5
उम्र-10 वर्ष
माइंड ट्री स्कूल
अम्बाला(हरियाणा)

गुँजन अर्थवानी
कक्षा-6
उम्र-12 वर्ष
शारदा विद्या मंदिर स्कूल
भोपाल(म.प्र.)

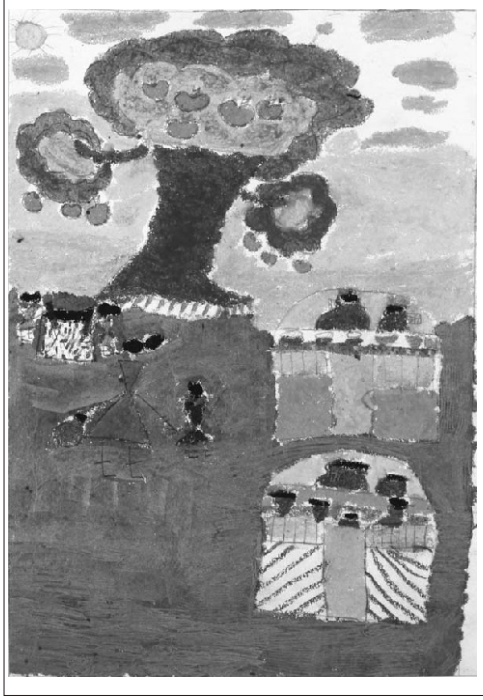

अनन्या खरे
कक्षा-8
उम्र-13 वर्ष
सागर पब्लिक स्कूल,
भोपाल(म.प्र.)

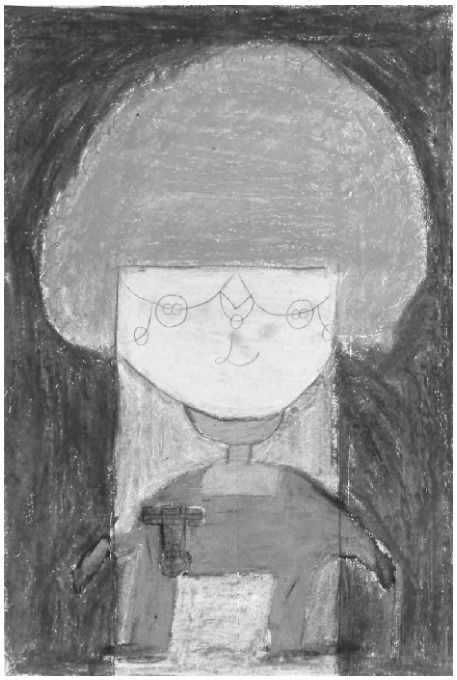

सौजन्य : मोहन शिंगणे

देह एक वस्तु नहीं है, यह एक स्थिति है, यह दुनिया पर हमारी पकड़ है और हमारी तर्कसंगत कल्पनाओं का खाका है। - सिमोन द बुवा

महिला प्रतिभाएँ वक्र रेखाओं में

- निर्मिश ठाकर

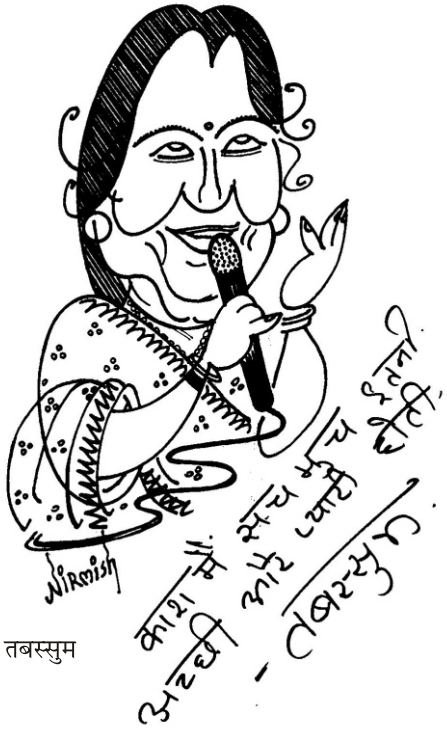

तबस्सुम

दुर्गा खोटे

कस्तूरबा

हेमा मालिनी

D82783

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

गेट वे ऑफ एक्सीलेंस
(Gateway of excellence)

"जिला स्तरीय उत्कृष्ट विद्यालयों एवं विकास खण्ड स्तरीय मॉडल स्कूलों में **प्रवेश कक्षा 9** हेतु चयन परीक्षा"

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

न्यूनतम शुल्क पर उच्च गुणवत्तायुक्त शिक्षा हेतु म.प्र.शासन की अभिनव पहल

क्यों चुनें (विशेषताएं)

1. शिक्षण कार्य में पारंगत (बी.एड./एम.एड.) विशेष परीक्षा से चयनित स्टाफ
2. पृथक–पृथक प्रयोगशालायें
3. स्मार्ट एवं वर्चुअल क्लासेस
4. NCERT पैटर्न पर उच्च गुणवत्तायुक्त शिक्षण
5. खेल, एन.सी.सी., एन.एस.एस., स्काउट/गाइड एवं संगीत की पाठ्येत्तर सुविधा
6. प्रतियोगी परीक्षाओं में चयन हेतु काउंसलिंग/कोचिंग
7. जिला स्तरीय उत्कृष्ट विद्यालयों में छात्रावास सुविधा
8. इन विद्यालयों में अध्ययन कर चुके विद्यार्थी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से चयनित होकर प्रतिष्ठित व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् हैं
9. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर बल, 10. निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें।

41 जिला स्तरीय शासकीय उत्कृष्ट विद्यालयों एवं 201 विकासखण्ड स्तरीय मॉडल स्कूलों में न्यूनतम शुल्क पर उच्च गुणवत्तायुक्त शिक्षा

इन विद्यालयों में प्रवेश, राज्य स्तरीय प्रवेश परीक्षा के माध्यम से किया जाता है। शैक्षणिक सत्र 2018–19 (अप्रैल 2018 से प्रारंभ) में कक्षा 9 वीं में प्रवेश हेतु परीक्षा कार्यक्रम का विवरण निम्नानुसार है :–

परीक्षा तिथि
04 मार्च 2018

- **परीक्षा केन्द्र– समस्त जिला एवं विकासखण्ड स्तर पर**
- **परीक्षा हेतु ऑनलाइन आवेदन भरने की अंतिम तिथि 15 फरवरी 2018**

आवेदन शुल्क 100/– रुपये निर्धारित जो कियोस्क पर देना होगा। इसमें कियोस्क शुल्क भी सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी राशि नहीं देनी होगी। परीक्षा में सम्मिलित होने हेतु ऐसे विद्यार्थी जो 8 वीं कक्षा में अध्ययनरत् हैं वे इस परीक्षा में भाग लेने हेतु पात्र हैं। मेरिट सूची में चयनित होने एवं न्यूनतम सी ग्रेड से कक्षा 8 वीं उत्तीर्ण करते हैं वे विद्यार्थी इन विद्यालयों में चयन हेतु पात्र होंगे। विस्तृत जानकारी हमारी वेबसाइट www.mpsos.nic.in पर देखें।

आवेदन हमारी वेबसाइट

www.mpsdc.gov.in/rmsa, www.mpsos.nic.in अथवा
एम.पी.आनलाइन www.mponline.gov.in पर कर सकते हैं।

नोट :– 1. परीक्षा के प्रवेश पत्र हमारी वेबसाइट www.mpsos.nic.in, www.mponline.gov.in अथवा मोबाइल एप MPSOS से डाउनलोड कर सकेंगे।
2. प्रवेश पत्र पर परीक्षा की समय सारणी आदि की जानकारी अंकित होगी।
फोन नम्बर : 0755–2552106.

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/18

स्कूल शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

AISECT UNIVERSITY™
MADHYA PRADESH Where aspirations become achievements.

आईसेक्ट विश्वविद्यालय की अभिनव प्रस्तुति

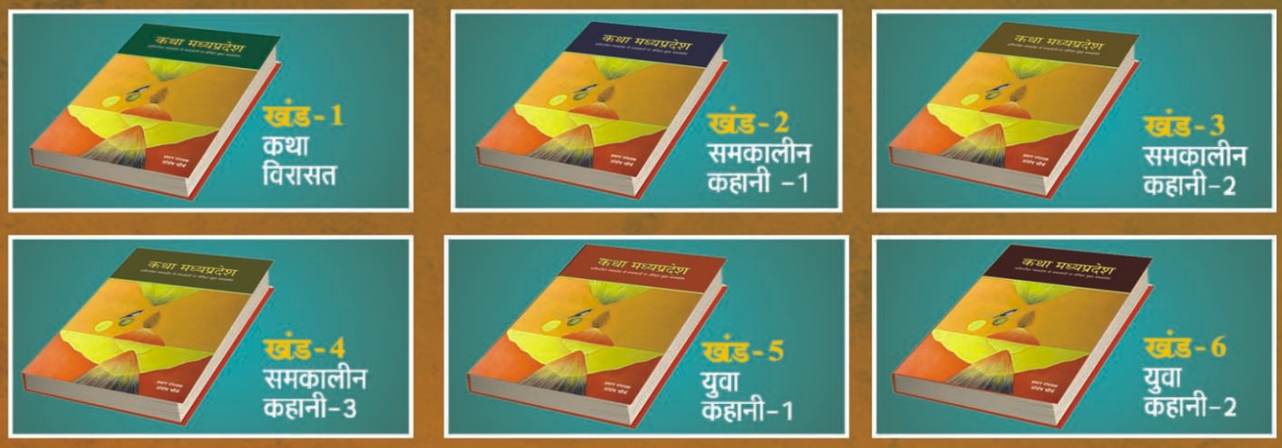

कथा मध्यप्रदेश

अविभाजित मध्यप्रदेश के कथाकारों पर केन्द्रित वृहद कथाकोश

संपादक–संतोष चौबे

विगत सौ वर्षों की कहानियाँ अर्थात अविभाजित मध्यप्रदेश के हिन्दी की पहली कहानी के प्रणेता माधवराव सप्रे से लेकर आज तक के युवतर कथाकारों की कहानियों का वृहद कथाकोश।

सुंदर, चित्ताकर्षक छपाई, छः खंडों में विभक्त हिन्दी का पहला कथाकोश, 228 कथाकारों की कहानियाँऔर कथालेखन को व्याख्यायित करते समीक्षात्मक आलेख ।

मूल्य : ₹ 5000
छूट सहित मात्र : ₹ 3500 में उपलब्ध
(डाक से मंगाने पर डाक खर्च अलग से देय होगा)

कथा मध्यप्रदेश प्राप्त करने के लिये संपर्क करें

मोहन सगोरिया
आईसेक्ट विश्वविद्यालय, बंगरसिया चौराहे के पास, चिकलोद मार्ग,
जिला रायसेन-464993
मो. 9630725033, फोन : 91-755-6766266,
ई-मेल : mohansagoriya1974@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वात्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 36-37, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन नं-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक-भँवरलाल श्रीवास